✶ पात्रपरिचय ✶

पुरुष

१. सूत्रधार ... नाट्यनिर्देशक ।

२. श्रीकृष्ण ... परमेश्वर, अवतारी पुरुष, राजा, नायक ।

३. नारद ... देवर्षि ।

४. धर्मदास ... द्वारपाल ।

५. धनञ्जय ... अर्जुन ।

स्त्री

१. नटी ... सूत्रधारक सहायिका ।

२. रुक्मिणी ... श्रीकृष्णक पटरानी ।

३. सत्यभामा ... श्रीकृष्णक छोटि रानी, मानिनी ।

४. सुभद्रा ... श्रीकृष्णक बहिनि, अर्जुनक स्त्री ।

५. मित्रसेना ... रुक्मिणीक सखी ।

६. सुमुखी ... सत्यभामाक सखी ।

श्रीः

उमापत्युपाध्याय-विरचितं

पारिजातहरण-नाटकम्

मङ्गलगीतम्—१

जय जय मधु-कैटभ-अर्दिनि[१] । जय जय महिषासुर-मर्दिनि ॥
धूमर-नयन भसम-मण्डिनि । चण्डमुण्ड बहु सिर खण्डिनि ॥
रक्तबिजासुर - संहारिणि । शुम्भ-निशुम्भ-हृदय-दारिणि ॥
सभ सुर शक्ति रूपधारिणि । सेवक सबहुक उपकारिणि ॥
अनुपम रूप सिंहवाहिनि । सबहि समय रहिहह दाहिनि ॥
सुमति उमापति आशिष बानि[२] । सकल सभा जय करथु भवानि ॥

(नान्दी-श्लोकः[३])

क्षोणी यस्य रदे मृणालधवलं मूलार्णवः पल्वलं
स्वर्गङ्गा वसनं बिभाति, गगनं कस्तूरिका-लेपनम् ।

जय जगदम्ब ॥

मङ्गल गीत--१

अर्दिनि = मारनिहारि । मर्दिनि = नष्ट करनिहारि । धूमर-नयन = धूम्र'क समान रंगक वा लाल श्री कारीक मिश्रणक रंगक (धूमू) आँखि । मण्डिनि = अलंकृत । दारिणि = विदीर्ण करनिहारि । दाहिनि = अनुकूल । सुमति = सुमंति = सुमन्त्री (उत्तम मन्त्री), सुबुद्धि ।

---

१ - 'क' 'ग' मे सब चरणक शीर्षान्त पाठ । छन्दक अनुरोधे" दीर्घान्त का ह्रस्वान्तपाठो उचित । परन्तु अन्तमवर्ण से पूर्वक स्वरक गुरु उच्चारण अपेक्षित- अर्दीनि, मर्दीनि, मण्डीनि । २—'क' 'ख' 'ग' बानी, भवानी । ३ - 'ख' बानीपाठः ।

चन्द्रश्वाक-ललाटचन्दनमुद्धश्रेणी गता मालवतां
तेन श्रीधरणीधरेण वृषिणा हिन्दूपतिः पाल्यताम् ॥१॥

अपि च,

यस्यास्ये पूर्णचन्द्रः स्वचनममृतं, दिग्जयश्रीश्च लक्ष्मी-
र्दोःस्तम्भः पारिजातो भ्रूकुटिकुटिलता संगरे कालकूटः ।
तीव्रं तेजोऽग्निरौर्वः पदभजनपरा राजराज्यस्तटिन्यः
पारावारो गुणानामतुल-रसमयः पातु हिन्दूपतिर्वः ॥२॥

(नान्द्यन्ते सूत्रधारः)

सूत्र०—अलमतिविस्तरेण। (नटीं प्रति) आर्ये ! इहागम्यताम् ।

नान्दी (नाटकक आरम्भिक मङ्गल पद्य)

अनिक दाँत पर पृथ्वी कमल-नालक खण्डरूप मे, (पृथ्वीक) आधारभूत समुद्र चभच्चा (छोटकी पोखरि)-रूप मे, स्वर्गक गङ्गा (मन्दाकिनी) कपड़ा रूप मे शोभित, आकाश कस्तूरीक लेपरूप मे, चन्द्रमा कारक सुन्दर चामरक रूप मे आ ताराक पंक्ति मालारूप मे छन्हि—से पृथ्वीक धारण कएनिहार श्रीविष्णु भगवान् (वराहावतार), हिन्दूपति हरिहरदेवक रक्षा करथि ॥१॥

आओरो—

अनिक मुँह पूर्णचन्द्र, अपन वचन अमृत, दिग्विजयक शोभा लक्ष्मी, स्तम्भ (खाम्ह) स्वरूप बाँहि पारिजातक गाछ, युद्ध मे भौंहक सनल विष, तीक्ष्ण प्रताप वड़वानल (समुद्रक आगि), चरणक सेवा मे लागल राजाक समूह (राजी) नदीस्वरूप छथिन्ह से ई अतुलनीय रसिक, गुणक समुद्र (पारावार) हिन्दूपति हरिहरदेव अहाँ सभक रक्षा करथु । (एहि पद्यमे समुद्रक गुण-सभक राजा मे आरोप करैत हुनका पारावार रूप मे चित्रित कएल गेल अछि) ॥२॥

(नान्दी-पद्यक अन्त मे सूत्रधार प्रवेश करैत छथि)

सूत्रधार—विशेष विस्तार (नान्दी पद्यक) कएनाइ उचित नहि । (नटीक प्रति) आर्ये ! एम्हर आउ ।

---

४ • 'क' पारावारो गुणानामयमतुलगुणः पातु वो भैरवितेशः ।

नटी—(प्रविश्य सूत्रधारं प्रति) आणवेदु अज्जो । [आज्ञापयत्वार्यः ।]

सूत्र०—आदिष्टोऽस्मि यवन वनच्छेद-कराल-करवालेन विच्छेदगत शत्रु-वेद-पथप्रकाशक-प्रतापेन भगवतः श्रीविष्णो र्दशमावतारेण हिन्दू-पति-श्रीहरिहरदेवेन, यथा उमापत्युपाध्याय विरचितं नवपारि-जातमङ्गलमभिनीय वीररसावेशं शममस्तु भवन्तो भूपालमण्डलस्य । तद् गीयतां मङ्गलम् ।

नटी—अहो भाअधेअं । [अहो भागधेयम् !]

(नाटक-रागे गीतम्—२)

सुरतरु घन उपवन करु मण्डप, वेदि रचल भल हिम-अचला ।
अपनहि आनन दान वचन भल, पुनि-पुनि पाउनि भवानि भला ॥
परमेसरा परमेसरा, जय जय सभ रस पेसरा ॥ध्रुवम्॥

नटी—(प्रवेश कए) आर्य आज्ञा देथु ।

सूत्रधार - यवनरूपी वनकें कटवा मे भयानक तरवारिस्वरूप, विभागयुक्त वा कटल चारुवेदक मार्गकें प्रकाशित करबाक योग्य प्रतापवाला, भगवान् विष्णुक दशम अवतारस्वरूप, हिन्दूपति श्रीहरिहरदेवक आज्ञा भेटल अछि जे उमापति उपाध्यायक बनाओल नवीन पारि-जात-मङ्गल नामक नाटकक अभिनय कए कें अहाँलोकनि राजास-भक वीररसक आवेश (संचार) कें शान्त करियन्हु । तें मङ्गल गबैत जाउ ।

नटी—अहो भाग्य !

नाटक-राग मे गीत—२

सुरतरु=देववृक्ष (पारिजात) । घन=सघन । मण्डप=मड़वा (देव-वृक्षक मण्डप बनओलनि) । वेदि=वेदी (विवाह मे बैसक बनाओल) । हिम-अचला=हिमालय । आनन=मुँह सँ (अपनहि मुहें भवानीक दान करबाक

चान-कला नयनानल थापल, मानल सुरुव भुजङ्गवरा ।
अमिञा-सार हवि अविरल होमल, हसल सकल सुर असुर नरा ॥
गाङ भिजाए भाङ भउ भोजन, सेज ओछाओल बाघछला ।
दीप समीप बरए फणि-मणिगण, देखि देव दुहु मने मिलला ॥
[५]भावें भगति भावित भय-भगवति, देथु सदा जय अभय वरा ।
भनथि उमापति सकल-नृपतिपति-हिन्दूपति प्रतिपालथु धरा ॥

नटी—(कर्ण दत्त्वा) अज्ज ! कीरिसो[६] सो कलअलो ? [आर्य ! कीदृशोऽयं कलकलः ?]

सूत्र०—भगवान् श्रीकृष्णः सह रुक्मिण्या देव्या रैवतोपवनमभिवर्तते, तदिह गत्वा पश्यावः । (इति निष्क्रान्तौ)
(इति प्रस्तावना)

वाक्य बजेत छथि; लोक मे कन्यादाता वाक्य पढ़ैत छथि, वर नहि)। पाउलि = पार्वती (पवित्र कएनिहारि) । पेसरा = पेशल (निपुण) । चान-कला = चन्द्रमाक कला सँ ओलिक (कपार परक तेसर) अग्नि-स्थापना कएलनि—विवाह मे हवन होइछ, कोशाक पात्र द्वारा अग्नि-स्थापना होइछ । एतए वानकला कोस्वपात्रक काज करैत छनि । सुरुव = स्रुव । भुजंगवरा = सर्पकें । अमिञ = अमृत । हवि = घृत (चन्द्रमा सँ अमृत लए घृतक काज चलओलनि) । अविरल = अनवरत । होमल = होम कएल । गाङ = गंगा मे । फणि-मणि = सर्पक मणि । भाव भगति = भक्ति भाव । भावित = ध्यान कएल गेल । भय-भगवति = महादेव ओ पार्वती । जय अभय वरा = विजय ओ अभयदान वरदान देथु । नृपति-पति = राजाक ईश = राजाधिराज।

नटी—(अकालि कें) आर्य ! केहन ई हल्ला विर्फक ?

सूत्रधार—भगवान् श्रीकृष्ण रुक्मिणी देवीक संग रैवतपर्वतक उपवन दिश जाइत छथि । तें एतए जाए कें देखी ।
(दुहु बाहर जाइत छथि) ।
प्रस्तावना समाप्त ॥

---

५ - ख म - भाव । ६ - कीदसो - ख ।

(श्रीकृष्ण-प्रवेशकम्)
(मालव-रागे गीतम्—३)

कंस-केसि कुल मोचल, उग्रसेन देल राज ।
यदुकुल कएल निराकुल, सैओ बहुत अछ[७] काज ॥
[८]भूमिक भार उतारव, तारव[९] दानव लोक ।
धरम धरातल थापब, हरब साधुजन-शोक ॥
गरब हरब सुरराजक, काज करब सभे[१०] जानि ।
भगत-भाव अवधारब, धरब परम पद आनि ॥
सकल-नरेश-मुकुटमणि, पटमहिषी - विरमान ।
हिन्दूपति रस-बिन्दक, सुमति उमापति भान ॥

(ततः प्रविशति श्रीकृष्णः, रुक्मिणी, सखी च ।)

श्रीकृष्णः—(स्वगतम्)—

भूमीभारनिवारणाय दुरितच्छेदाय शुद्धात्मनां
वेदार्थ-व्यवहारणाय च परित्राणाय धर्मस्य च ।

श्रीकृष्णक प्रवेशक गीत मालवराग मे—३

कंस-केसि = कंस ओ केशी नामक राक्षस । मोचल = मोक्ष देल (मारल)। निराकुल = शान्त (उपद्रव-रहित) । अवतारव = हटाएब । तारव = सद्गति देब । गरब = गर्व (अहंकार) । सुरराज = इन्द्र । भगत-भाव = भक्तिभावना । अवधारब = विचारब । पद = उचित स्थान । पटमहिषी = पटरानी । विरमान = विशेष अनुरक्त, तल्लीन । बिन्दक = पओनिहार ।

(तत्पश्चात् श्रीकृष्ण रुक्मिणी ओ सखी प्रवेश करैत छथि)

श्रीकृष्ण—(मनहि मन) पृथ्वीक भार कें हटएबाक लेल, पवित्र व्यक्तिक भय कें नष्टकरबाक लेल, वेदक अर्थक व्यवहारक लेल, धर्मक रक्षाक लेल, देवताब्राह्मणक विरोधी दुष्टसभक घमण्डक नाश करबाक

७—ख - अछि । ८— ख' भूमिभार अवतारब । ९. -'ख' तारब । १० - सब - ख ।

वर्षस्य प्रशमाय दुष्टमनसां देव-द्विजद्रोहिणां
ब्रह्मेन्द्रादि-मदक्षयाय च मया जन्मोऽवतारो भुवि ॥३॥

(प्रकाशम्) देवि ! दृश्यतां रैवतोपवने वसन्तशोभा ।
(श्रीकृष्णो रुक्मिणी सखी च गीतं गायन्ति[११] ।)

(वसन्त-रागे गीतम्—४)

अनगनित किंशुक चारु चम्पक बकुल बकहुल फुल्लिआ ।
पुनु कतहु पाटलि पटलि नीप नेवारि माधवि मल्लिआ ॥
कर जोरि रुकुमिणि कृष्णसंग वसन्त-रंग विहारहीं ।
ऋतु रभस सिसिर समापि रसमय रमथि संग विहारहीं ॥
अति मञ्जु मञ्जुल पुञ्ज पिञ्जल चारु चूअ विराजहीं ।
निज मधुहि मातल पल्लवच्छले[१२] लोहितच्छवि छाजहीं ॥
पुनु केलि-कलकल कतहु आकुल कोकिला-कुल कूजहीं ।
जनि तीनि जग जिनि[१३] मदन-नृपमनि विजय राज सुराजहीं ॥

लेल ओ ब्रह्मा इन्द्र आदि देवताक मद (अहंकार) क नाश करबाक लेल हम पृथ्वी पर अवतार लेल अछि ॥३॥

(सुनाए के) रैवत पर्वतक उपवन मे वसन्तक शोभा के देखू ।
(श्रीकृष्ण रुक्मिणी ओ सखी गीत गबैत छवि ।)

वसन्त-राग मे गीत—४

किंशुक = पलास । चारु = सुन्दर । फुल्लिआ = फुलाएल । पाटलि-पटलि = पाँड़रि फूलक पंक्ति । नीप = कदम्ब । मल्लिआ = मल्लिका (चमेली) । रभस = बलजोरी । समापि = समाप्त कए । मंजु = सुन्दर । मञ्जुल पुञ्ज = सुन्दर ढेर । पिञ्जल = पीयर । चूअ = चूत (आम) । पल्लवच्छले = नवीन पातक लाये । लोहित = लाल । केलि-कलकल = विलास करैत गुनगुनाएब ।

११ - 'क' 'ग' मे एहि पंक्तीक अभाव । १२ - पल्लवच्छवि ख ग । १३ - जिति-ख ग ।

नव मधुर मधुरस-[१४]मुगुध मधुकर नीक-निक[१५] रस भावहीं ।
जनि मानिनी[१६]-मन-मान-भञ्जन मदन गुण गुरु गावहीं ॥
वह मलय निर्मल[१७] कमल परिमल पवन उपवन सोहहीं[१८] ।
ऋतुराज रैवत सकल दैवत मुनिहु मानस मोहहीं ॥
यदुनाथ साथ विहार हरषित सहस-सोडह[१९] नायिका ।
भन गुरु उमापति सकल नृपपति होथु मङ्गलदायिका ॥

श्रीकृष्णः—प्रिये ! विश्रम्यताम् । (इत्युपविश्य आकाशाभिमुखम्) अहो[२०] आश्चर्यम् ॥

(नारद-प्रवेशकं वरारी[२१]-रागे गीतम्—५)

अवतरु अवनी तेज[२२] अकाश । न थिक दिवाकर, न थिक हुताश[२३] ॥
धोती धवल तिलक उपवीत । ब्रह्मतेज [२४]अति अधिक उदीत ॥
वैष्णव दण्ड वेद कर शोभ । आवथि नारद दरसन लोभ ॥

कोकिल-कुल = कोइलीक समुदाय । मधु-रस-मुगुध = मधुक आस्वादन मे मुग्ध । मधुकर = भौंरा । मलय-परिमल = मलयाचलक सुगन्धि । ऋतुराज = वसन्त । रैवत = रैवत-पर्वत पर । दैवत = देवता । यदुनाथ = श्रीकृष्ण । सहस-सोडह = सोलह हजार ।

प्रिये ! सुस्ता लिअ । (देखिके आकाश दिस) आश्चर्य !!

(नारदक प्रवेशक गीत मालव-राग मे—५)

अवतरु = उतरलाह । अवनी = पृथ्वी पर । दिवाकर = सूर्य । हुताश = अग्नि (आकाश सं उतरैत नारदक तेज थिक, अग्नि नहि) । धवल = उज्जर ।

१४ - मुग्ध - क । १५ - मधुकर कोकिला रस ख ग । १६ - मानिनीजन ख ग । १७ - मलय परिमल कमल उपवन कुसुम सौरभ सोहहीं-ख ग । १८ - सोहञी - क । १९ - षोडस - ख ग । २० - अहो (अभाव) ख ग । २१ - मालव - ख । २२ - तेजल अकाशे - ख ग । २३ - हुताशे - ख ग । २४ - तह - क ।

परम युगत तिनि जगतक हीत। ब्रह्माक[२५] सुत, मोर शम्भुक मीत॥
सुमति उमापति भन परमान। जगमाता देइ[२६] हिन्दूपति जान॥

(ततो[२७] रङ्गभूमिस्थले प्रविशति नारदः।)

नारदः—(सहर्षम्[२८])—

न शम्भुना वा न विरञ्चिना वा,
न योगिना यन्मनसापि दृष्टम्।
तदद्य गोविन्दपदारविन्दं,
विलोकयिष्यामि दृशा कृतार्थः॥४॥

(२९आसावरी-रागे गीतम्—६)

जाएब हरिक समाजे। पाओब[३०] नयन-सुख आजे॥
३१की आरे॥ध्रुवम्॥
योगहु न जानिअ जन्हो। दिठि भरि देखब तन्हो[३२]॥
ब्रह्मा शिव सेव जाही। काहि भजब तेजि ताही॥
भनहि भगति लेव माँगी। समय परम-पद लागी॥

उपवीत = जनेउ। उदीत = उदित (प्रकटित)। वंशय = वीणाक। युगत = युक्त (उपयुक्त)। तिनि जगतक = तीनू लोकक।

(तखन मंचपर नारद प्रवेश करैत छथि)

नारद—(प्रसन्नता पूर्वक) अकरा ने महादेव ने ब्रह्मा आ ने योगी मनहुँ सँ देखने छथि ताहि श्रीकृष्णक चरण-कमल केँ आइ आँखि सँ कृतार्थ भए देखब॥४॥

(आसावरी-राग मे गीत—६)

समाजे = सभा। दिठि = दृष्टि (आँखि)। विरमाने = विशेष अनुरक्त। पुनमत = पुण्यवान्।

---

२५ = ब्रह्मासुत ख ग। २६ = देवी = ख। २७ = रङ्गभूमिस्थले (भाव) ख ग।
२८ = मानसे कृष्णं दृष्ट्वा सहर्षं = क। २९ = नारदस्यागमनम् आसावरी रागे = क।
३० = पाएब—ख। ३१ = (अभाव) ख। ३२ = तनी—ख।

हिन्दूपति जिउ जाने। माहेसरि देइ विरमाने॥
सुमति उमापति भाने। पुनमत[३३] भज भगवाने॥

(परिक्रम्य) अहो[३४]! इयं सत्यभामायाः सखी सुमुखी।

सुमुखी—(प्रविश्य) अनुप्पेसिदह्मि देइए सच्चभामाए, जहा एक्कते मं अज्जउत्तो सुमरेदि, तदो[३५] गमिस्सं। [अनुप्रेषितास्मि देव्या सत्यभामया, यथा एकान्ते माम् आर्यपुत्रः स्मरति, ततो गमिष्यामि।] (नारदं प्रति) बम्हणं णमामि, पुच्छामि अ, अहो! णारदो वाणरो वा भवं? [ब्राह्मणं नमामि, पृच्छामि च, अहो! नारदो वानरो वा भवान्?]

नारदः—भगवान्[३६] नारदोऽहं, त्वं पूर्णकामा भव। मां वानरं भणसि? तूनमेव कोपपथानुसारी ते वचनक्रमः।

सुमुखी—(निरूप्य) भो[३७] नारद! अच्चरिअं!! दिव्वकइन्दो णारदो। [आश्चर्यं! दिव्यकपीन्द्रो नारदः।]

(भूमि केँ) इयेह तँ सत्यभामाक सखी सुमुखी छथि!

सुमुखी—(प्रवेश कए) देवी सत्यभामा हमरा नियुक्त कएने छथि जे जखन एकान्त मे आर्यपुत्र (पतिदेव श्रीकृष्ण) हमर स्मरण करथि तखन नहि जाएब। (नारदक प्रति) ब्राह्मण केँ प्रणाम करैत छी आ पुछैत छी जे अपने नारद छी कि वानर?

नारद—भगवान् नारद छी हमरा सँ मनोरथ सँ पूर्ण होअह। हमरा वानर कहैत छह? तखन तँ ई बिसिअएबाक लेल लोहर बोल बोलह अछि।

सुमुखी—अहो नारद! आश्चर्य, अपने तँ दिव्य-कइन्द छी। (प्राकृत मे कइ शब्दक कवि ओ कपि (वानर) दू अर्थ होइत अछि। कइन्द सँ कवीन्द्र ओ कपीन्द्र बुझल जाए सकैछ।)

---

३३ = पुनमति भज—ख ग। ३४—अहो (अभाव) ख। ३५—तहा—ख।
३६—पूर्णकामा भव—ख। ३७—निरूप्य भो नारद (अभाव) ख।

नारदः—दिव्यकपि भणसि ? सर्वथा श्लेषकुशलासि । कथय, कुत्र श्रीकृष्णः ?

सुमुखी—सन्निहितो ज्ञेयः । [सन्निहित एव ।]

दौवारिको धर्मदासः—(प्रविश्य३८)आज्ञापयति श्रीकृष्णः, पश्य सत्यभामायाः पन्थानमिति ।

नारदः—दौवारिक ! श्रीकृष्णाय नारदं मां निवेदय ।

दौवारिकः—(श्रीकृष्णनिकटं गत्वा) देव ! द्वारि नारदस्तिष्ठति ।

श्रीकृष्णः—सत्वरमानीयताम् ।

दौवारिकः—महर्षे ! उपसर्पतां देवः३९ । (इति निष्क्रान्तः ।) (नारद उपसर्पति । श्रीकृष्णः प्रणम्य देव्या सह सम्पूज्य उपवेशयति ।)

नारदः—वंशवृद्धिरस्तु ।

श्रीकृष्णः—आमोदो विशेषेण ज्ञायते । किञ्चिदुपहृतं ध्यमानीतमस्ति ?

नारद—दिव्य-कपि (सुन्दर बानर) कहैत छह ? सभ तरहें श्लेष-युक्त (एक पदक अनेक अर्थ लेबा में) वाक्य रचबा मे पटु छह । कहह कतए श्रीकृष्ण छथि ?

सुमुखी—लगहि मे छथि ।

दौवारिक—श्रीकृष्णक आज्ञा अछि जे सत्यभामाक बाट देखह ।

नारद—दौवारिक (द्वारपाल) ! श्रीकृष्णक लग निवेदन करह जे हम नारद आएल छी ।

दौवारिक (श्रीकृष्णक लग जा०) देव ! द्वार पर नारद छथि ।

श्रीकृष्ण—झटदए लावह ।

दौवारिक—महर्षि ! देवक समीप चलि जाओ (चाहर गेल)।

(नारद समीप अबैत छथि श्रीकृष्ण अपन देवीक संग प्रणाम ओ पूजा कए बैसबैत छथिन्ह ।)

नारद - वंश बढ़ओ ।

श्रीकृष्ण—महर्षि ! तीनू लोक में विचरण करैत अपने कोनो आश्चर्य (अद्भुत बात वा वस्तु) कतए देखल अछि ?

---

३८ - प्रविश्य (अभाव) ख ।

३९ - उपसर्पतां देवम्- क ख ।

श्रीकृष्णः—महर्षे ! त्रिलोकसञ्चारिणा भवता किमाश्चर्यं कुत्र दृष्टम् ?

नारदः—भवच्चरितादन्यत् किमाश्चर्यम् ?

श्रीकृष्णः—आमोदो विशेषेण ज्ञायते । किञ्चिदुपहृतं ध्यमानीतमस्ति ?

नारदः—श्रीस्ते वक्षसि किं देव, वाणी चास्ये स्तुतिः कुतः ।
शिवब्रह्मादिसेव्यस्य, सेवका के तवेतरे ॥५॥

(आसावरी-रागे गीतम्—७)

तोहें हरि अन्तरयामी । गुपुत करह किए स्वामी ॥
४०कि हरि हरि ॥ध्रुवम्॥

सुरपति देल अमूले । पारिजात एक फूले ॥
तुअ पद पूजय पाऊ । तें दरसन भने४१ आऊ ॥
भगति दीअ४२जओं पानी । से लेहे अमिअ सम जानी ॥
दीनबन्धु तोहें देवा । करय पार के सेवा ॥
सुमति उमापति भाने । पुनमत भज४३ भगवाने ॥
हिन्दूपति जिउ आने । माहेसरि देइ विमाने ॥

नारद—अपनेक चरित्र सं आन कोन आश्चर्य अछि ?

श्रीकृष्ण - सुगन्धि विशेष रूपें लागि रहल अछि ! किछु उपहार (सनेस) अनने छी की ?

नारद - लक्ष्मी अहाँक हृदये मे छथि तें श्री दिअ, अहाँक मुँह मे सरस्वती छथि तें स्तुति की करू, जिन ब्रह्मा आदि अपनेक सेवक छथि तें आन के अपनेक सेवक भए सकैत अछि ? ॥५॥

(आसावरी-राग मे गीत—७)

अन्तरयामी = दोसराक मनक बात बुझनिहार । गुपुत = गुप्त । सुरपति = इन्द्र । अमूले = अमूल्य । अमिअ = अमृत । विरमाने = विशेष अनुरक्त ।

---

४० - (अभाव) ख । ४१ - मन-ख ग ।

४२ - जें ख ग । ४३ - पुनमति भजु ख ग ।

(इति पुष्पं ददाति । श्रीकृष्णो गृहीत्वा सादरं पश्यति । सर्वे साश्चर्यं पश्यन्ति ।)

(सत्यभामा-प्रवेशार्थं मालव-रागे गीतम्—८)

सतभामा देवि देल परवेश । स्वामि सोहाग सोहाउनि वेश ॥
हरषित हृदय गरुअ अभिमान । कृष्णपिआरी प्राणसमान ॥
देखइत चानकलाक संदेह । वसुधा वसु जनि बिजुरी रेह ॥
मणिमय भूषण अङ्ग अमूल । कनक-लता जनि फूलल फूल ॥
सुमति उमापति कवि परमान । पटमहिषी देवि हिन्दूपति जान ॥

(ततः प्रविशति सत्यभामा, सुमुखी च ।)

सत्यभामा - सहि सुमुहि ! सच्चं सुमरइ अज्जउत्तो ? [सखि सुमुखि ! सत्यं स्मरत्यार्यपुत्रः ?]

सुमुखी—असच्चं देइए अग्गदो कहस्सं ? [असत्यं देव्या अग्रे कथयिष्यामि ?]

सत्यभामा— (पञ्चम-रागे गीतम्—९)

सखिहे[४४] रभसि रस चलु फुलवाड़ी ।
तहाँ मिलत मोर मदन मुरारी ॥

(ई कहि फूल देत छथिन्ह । श्रीकृष्ण फूल लए कें सादर देखैत छथि। सभ साश्चर्य सँ देखैत छथि ।)

(सत्यभामाक प्रवेशक गीत मालवराग मे—८)

गरुअ = गुरु (पेच) । वसुधा = पृथ्वी पर । बिजुरी = बिजुरक रेखा । अमूल = अमूल्य । कनक-लता = सोनक लत्ती मे । सुमति = सुमन्त्री ।

(तखन सत्यभामा ओ सुमुखी प्रवेश करैत छथि)

सत्यभामा - सखि सुमुखि ! की सत्ते आर्यपुत्र (पतिदेव) स्मरण करैत छथि ?

सुमुखी —देवीक आगू असत्य कहब ?

४४ - रभसि चलु-क ख ।

कनक - मुकुट[४५] -माणिक भल भासा ।
मेरु - शिखर जनि दिनमणि - वासा ॥
सुन्दर नयन वदन सानन्दा ।
उगल युगल - कुवलय लय चन्दा ॥
पीत - वसन तन भूषण[४६] मणी ।
जनि नवघन उर[४७] घन - दामिनी ॥
वनमाला उर उपर उदारा ।
अञ्जन - गिरि जनि सुरसरि - धारा ॥
जीवन - धन - मन सरवस देवा ।
से सय करथ हरिचरणक सेवा ॥
सुमति उमापति भन परमाने ।
जगमाता देवि हिन्दूपति जाने ॥

सहि सुमुहि ! उज्ज अज्जाणे अच्चरिअं आमोदो । मए वि माहवी-लदान्तरेण पेक्खम्हि, जहा किं करेदि परोक्खे अज्जउत्तो । [सखि सुमुखि ! अद्य उद्याने आश्चर्यम् आमोदः । मयापि माधवी-लतान्तरेण प्रेक्ष्यते, यथा किं करोति परोक्षे आर्यपुत्रः ।] (इति तथा करोति ।)

सत्यभामा— (पञ्चम-राग मे गीत)—९

रभसि = उत्कण्ठित भए । मदन-मुरारी = श्रीकृष्ण (कामदेव सन सुन्दर मुरारि) । मेरु-शिखर = सुमेरु पर्वतक चोटी पर । दिनमणि = सूर्य । युगल = जोड़ा । कुवलय = कुमुदिनी । दामिनी = बिजलोका । उर = छाती । वनमाला = गरा सँ ठेहुन धरिक माला । उदारा = उदार (प्रशस्त) । अञ्जन-गिरि = करिआ पर्वत । सुरसरि = गङ्गा । सरवस = सर्वस्व ।

सखि सुमुखि ! आइ फुलवाड़ी मे अद्भुत सुगन्धि अछि । हमहूँ माधवी लताक बीच सँ देखैत छी जे परोक्ष मे श्रीकृष्ण की करैत छथि ।

(ई कहि सहिना करैत छथि ।)

४५ - मुकुट मणि मन-क ख ।
४६ - भूषण मणि-क ख । ४७ - नवघन उर दामिनी-क ख ।

श्रीकृष्ण—नारद ! किमस्य पुष्पस्य माहात्म्यम् ?

नारदः—रूपं गन्धं रसं स्पर्शं नरो यो यं यमिच्छति ।
याचितं तं तथा तस्मै सर्वं पुष्पं प्रयच्छति ॥६॥

सत्यभामा - अच्चरिअं क्खु पारिजादस्स पुप्फं ! का अण्णा जेट्ठदेइं परिचेजिअ पाइस्सदि ? [आश्चर्यं खलु पारिजातस्य पुष्पम् ! का अन्या ज्येष्ठदेवीं परित्यज्य प्राप्स्यति ?]

श्रीकृष्णः - (रुक्मिणीं प्रति) देवि ! गृह्यतामिदम् ।

रुक्मिणी - (प्रणम्य गृहीत्वा) महन्तो क्खु एसो पसादो पदोः । [महान् खल्वेष प्रसादः पत्युः ।]

सत्यभामा - जुत्तं एदं जेट्ठकुमारमादुः । [युक्तमिदं ज्येष्ठकुमारमातुः ।]

सुमुखी - कधं जुत्तं ? परं देई परोक्खे चिट्ठिदा । [कथं युक्तम् , परं देवी परोक्षे स्थिता ।]

रुक्मिणी - सहि मित्तसेणे ! सम्भावेहि महूसवम् । [सखि मित्रसेने ! सम्भावय महोत्सवम् ।]

मित्रसेना - सहि ! सव्वधा कदव्वं, जइ देई णच्चइस्सदि । [सखि ! सर्वथा कर्तव्यं, यदि देवी नर्तिष्यति ।]

श्रीकृष्ण—नारद ! एहि फूलक की माहात्म्य छैक ?

नारद—जे व्यक्ति रूप, रस, गन्ध स्पर्श ओ आहि जाहि पदार्थक इच्छा करैत अछि, मङ्गला पर ओहि व्यक्ति कें ई फूल सभ किछु देत अछि ॥६॥

सत्यभामा—आश्चर्य थिक ई पारिजातक फूल !! जेठ रानी कें छोड़ि आन के एकरा प्राप्त कए सकैत अछि ?

श्रीकृष्ण - (रुक्मिणीक प्रति) देवि ! ई लिअ ।

रुक्मिणी - (प्रणाम कए, लए कें) ई पतिदेवक महान् प्रसाद थिक ।

सत्यभामा - जेठ कुमारक मातृक लेल ई उचित भेल ।

सुमुखी—कोना युक्त भेल ? परन्तु देवी (सत्यभामा) परोक्ष मे छी ।

रुक्मिणी - सखि मित्रसेना ! महान् उत्सव (वा वसन्तोत्सव) मनाउ ।

मित्रसेना—सखि ! सभ तरहें मनाएब, (यदि देवी रुक्मिणी) नाचथि ।

रुक्मिणी - जहा आणवेदि पिअसही । [यथा आज्ञापयति प्रियसखी ।] (इति तथा करोति ।)

(राजविजय-रागे गीतम् - १०)

आज[४८] जन्म-फल भेला । सब परिहरि[४९], हरि मोहि फुल देला ॥
पुजल पुरब हमे[५०] गौरी । आसा तनि परिपूरलि[५१] मोरी ॥
उपर रहल मोर माथे । सोहह सहस बरनारिक साथे ॥
सुमति उमापति भाने । [५२]माहेसरि देइ हिम्बूपति जाने ॥

सत्यभामा - सहि सुमुहि ! अदो वरं किं पेक्खिदव्वं, किं सुणिदव्वं ? तदो णिवट्टस्स । आवासं जेव्व गच्छम्ह । [सखि सुमुखि ! अतः परं किं प्रेक्षितव्यं, किं श्रोतव्यम् ? ततो निवर्त्तस्व । आवासमेव गच्छावः ।]

सुमुखी - एवं ण जुत्तं देवं अदिट्ठिअ । [इदं न युक्तं देवमदृष्ट्वा ।]

श्रीकृष्णः - (एकान्ते[५३] मनसि) कथं विनेया प्रिया सत्यभामा ?

सत्यभामा - अज्जवि पिआ-सद्दो सुणीअदि ज्जेव । [अद्यापि प्रियाशब्दः श्रूयत एव ।] (उपसृत्य सगद्गदम्) जअदि ... [जयति] (इत्यर्धोक्ते वाक्स्तम्भः । नारदं प्रणमति ।)

रुक्मिणी - प्रियसखीक जे आज्ञा । (ई कहि महिमा करैत छथि) ।

राजविजय-राग मे गीत—१०

परिहरि = छोड़ि कें । परिपूरल = परिपूर्ण कएलनि ।

सत्यभामा - सखि सुमुखि ! एहि सँ बाधू की देखब, की सुनब ? तें मुड़ । घरहि चल ।

सुमुखी—देव (श्रीकृष्ण) क बिनु एतनहि जाएब ठीक नहि होएत ।

श्रीकृष्ण—(एकान्त मनमे) प्रिया सत्यभामा कें कोना मनाएब ?

---

४८ - आज जनम मोर सुफलित भेला—ख । ४९ - परिलेकि-ख ग ।
५० - हम ख ग । ५१ - परिपूरल-ख ग । ५२ "पुनमति भनु भनमाने-ख ग ।
५३—(अनाव) ख ग ।

नारदः - स्वामिबहुमान्यतां गमिष्यसि ।

सत्यभामा - अज्जवि सा आसा ? (अद्यापि सा आशा ?)

श्रीकृष्णः - प्रिये ! इदमासनमास्यताम् ।

सत्यभामा - (सगद्गदाक्षरम्) अज्जउत्त ! वाणि ज्जेव सीरोवेअणा उप्पण्णा, तदो आवासं ज्जेव गच्छम्हि । [आर्यपुत्र ! इदानीमेव शिरोवेदना उत्पन्ना, तत आवासमेव गच्छामि ।] (इति सख्या सह निष्क्रान्ता ।)

रुक्मिणी - अज्जउत्त ! उण[५४] भोअणं कदुअ बह्मणा महस्सिणा पुणीअदु । [आर्यपुत्र ! पुनः भोजनं कृत्वा ब्राह्मणा महर्षिणा पूयताम् ।]

श्रीकृष्णः - एवमस्तु ।

(ततो नारदेन सख्या च समं देवी निष्क्रान्ता ।)

श्रीकृष्णः - (स्वगतम्)[५५] प्रत्यक्ष-विपक्षं मानसं कृत्वा सत्यभामां सन्तापयति । तथाहि-

---

सत्यभामा—एखनहुँ प्रियाशब्द सनैत छी ? (लगा जाए कें गद्गद कण्ठ सँ) जय हो (आधे कहैत, बोल लड़खड़ाए रुकि जाइत छनि । नारद कें प्रणाम करैत छथिन ।)

नारद— स्वामीक द्वारा बहुत मानल जाएब ।

सत्यभामा—आबहुँ से आशा ?

श्रीकृष्ण - प्रिये ! एहि आसन पर बैसू ।

सत्यभामा—(गद्गद कण्ठ सँ कहैत) आर्यपुत्र ! एखनहि माथ मे दर्द ऊठि गेल अछि, तें घरहि जाइत छी । (ई कहि सखीक संग बाहर भए जाइत छथि ।)

रुक्मिणी—आर्यपुत्र ! महर्षि भोजन कैए कें एहि घर कें पवित्र करथ ।

श्रीकृष्ण—एहिना हो ।

(तखन नारद ओ सखीक संग रुक्मिणी बहार जाइत छथि ।)

---

५४ - ब भोअण कदुअ महस्सिणा - ख । ५५ - प्रत्यक्षं मानसं - ख ।

मालिन्येन मसीमसीकृतमुरः कम्पेन चोत्कम्पितं
मोहेन द्रवितं विलोचनजलैः श्वासैः पुनः शोषितम् ।
निःक्षिप्तं च सगद्गदेन वचसा कारुण्य-वाराम्निधौ
विश्लेषेण पुनर्मदीयहृदयं न्यस्तं हुताशे तया ॥७॥

अन्वेषयामि तावदुपवनलतासु । (परिक्रम्य) नूनं परित्यज्यैव गता प्रिया । तदावासमेव गच्छामि । (पुनः परिक्रम्य) इदं प्रियावासद्वारम्, इयं शिशिरोपचारव्यग्रा सुमुखी । पृच्छामि तावदेनाम् । (प्रकाशम्) सुमुखि ! प्रियायाः का वार्ता ?

सुमुखी - (प्रविश्य)[५६] देव ! सेव्व पुव्वं अन्नासं वासन्ती, सम्पदं ऊणा देव्वेण किदा । [देव ! सैव पूर्वमनायासं वासन्ती, साम्प्रतम् ऊना दैवेन कृता ।]

श्रीकृष्ण—(मनहि मन) प्रत्यक्ष विरुद्ध मन कए कें सत्यभामा हमरा दुखी बनाए रहलि छथि । जेना कि—

हमरा हृदय कें श्री मालिन्य (मनकें विकृत करबा) सँ मलिन कए देलनि अछि, छातीक कम्पन सँ कँपा देलनि अछि, मोह सँ बहुरायल नोर सँ द्रवित कए देलनि अछि, श्वास सँ सुखा देलनि अछि, गद्गद वाणी सँ करुणा-सागर मे फेकि देलनि अछि, ओ पुनः अपन वियोग सँ सँ आगि मे राखि देलनि अछि ॥७॥

तावत् फुलबाड़ीक लतीक भीतर मे तकैत छियनि। (घूमिकें) निश्चये छोड़िए कें प्रिया चलि गेलीहि ! सँ हमक ड्योढ़िलहि पर जाइत छी । (फेरि घूमि कें) ई प्रियाक आवासक दोआरि थिक आ ई ठढ़इ उपचारक लेल व्याकुल सुमुखी थिकीहि । तावत् हिनकहि पुछैत छियनि । सुमुखि ! प्रियाक की समाचार ?

सुमुखी—(प्रवेश कए) उबेह । पहिने अनायासे वसन्तोत्सव प्राप्त छल, आब भाग्यदोषें कम भए गेल ।

---

५६ - देव (अभाव) - ख ।

श्रीकृष्णः - प्रियाया परिजनस्यापि वाणी वर्त्तते । विशेषेण कथय ।

सुमुखी - (नाट रागे[५०] गीतम् - ११)

कि कहब माधव ! तनिक विशेषे । अपनहु तनु धनि पाब कलेसे ॥
अपनुक आनन आरसि हेरी । चानक भरमे कपि कत बेरी ॥
भरमहु निअ कर उर पर आनी । परसें तरसे[५८] सरसीरुह जानी ॥
चिकुर निकर निअ नयन निहारी । जलधरजाल जानि हिय हारी ॥
अपन वचन पिकरव अनुमाने । हरि हरि तेहु परि तेजय पराने ॥
माधव ! आबहु करिअ समधाने । सुपुरुष निठुर न[५९] रहय निदाने ॥
सुभति उमापति भण परमाने । माहेसरि देइ हिन्दूपति जाने ॥

ता निवेदेमि देव्यै देवागमनम् । [तन्निवेदयामि देव्यै देवागमनम् ।]

श्रीकृष्ण (सत्रासम्) सुमुखि ! तथा विधेय यथा तापयति मां देवी ।

(सुमुखी निष्क्रान्ता)

श्रीकृष्ण—प्रियाक सेवक-वर्गोक बाल टेहे अछि । विशेषरूपें कहह ।

सुमुखी[५०] (नाट - रागे गीत)—११

विशेसे = विशेष हालत । तनु = देह सं । आरसि = अपना में । चानक भरम = चन्द्रमाक भ्रम । निअ कर = अपन हाथ । उर = छाती । परसे तरस = स्पर्श सं डराइत । सरसीरुह = कमल । चिकुर-निकरे = केश समूह । पिक-रव = कोइलीक स्वर । समधान = समाधान ।

सं सेवक (कृष्णक) आगमन देवी कें निवेदित करैत छी ।

श्रीकृष्ण -(डराइत) सुमुखि ! से काज नहिं करिह आहि सं देवी हमरा हृदयक कष्ट जनाबथि ।

(सुमुखी बहार भए जाइत छथि)

---

५० - (नाट) - क । ५८ - परस तरस - क । ५९—रहय न - क ।

श्रीकृष्ण तावज्जालमार्गेण प्रपद्यामि प्रियाया कोपावस्थाम् । (तथा कृत्वा) हा धिक् प्रमादः !! (श्लोक)

बद्ध्वा शुक्लपटेन भालमखिलं हित्वा हठाद् भूषणं
प्रश्वासैः परिशोष्य क्षीणमधरं ग्लानं च शाश्वत्स्वरम्[६०] ।
सन्तापं शिशिरोपचारनिवहैरावेदयन्ती तनो
कोपान्मामभिषिञ्चतीव हृदयं व्यस्तं कदुष्णाश्रुभिः ॥८॥

(ततः प्रविशति यथोक्तरूपा सत्यभामा, रामवदीजयन्ती सुमुखी च ।)

सुमुखी—देइ ! समस्ससिहि । [देवि ! समाश्वसिहि ।]

सत्यभामा—किं उण उवआरेहिं । [किं पुनरुपचारैः ?]

([५९]सुमुखीं सम्बोध्य श्रीकृष्णं प्रति उलहन— गीत गायति ।)

(कोलाव—रागे गीतम्— १२)

हरि[६१] सओं प्रेम आग कय लाओल, पाओल परिभव ठामे ।
जलधर छाहरि तर हरो[६२] सुखिहुं आतप भेल परिनामे ॥

श्रीकृष्ण तावत् खिड़की सं प्रियाक - सर, - ल अवस्थाक देखैत छी।(तहिना कए) हाय रे हमर लापरवाही !

ओ (हमर प्रिया) उज्जर कपड़ा सं सम्पूर्ण कपार कें बान्हि कें, गहना कें हठपूर्वक त्यागि कें उसास सं लाल लाल ठोर कें सुखाय कें क्षुभरल स्वर कें बहुत सं छोड़ि (साइवत्) । ठंढाक उपचार सभ सं शरीरक सन्ताप कें सूचित करैत क्रोध सं हृदय-स्थित हमरा गर्म गर्म नोर सं जेना नहबैत होथि ॥८॥

(ततः पूर्वोक्त रूपमे सत्यभामा ओ हुनका हेतिक सुमुखी प्रवेश करैत छथि ।)

सुमुखी—देवि ! धैर्य धरू ।

सत्यभामा—उपचार मध्य सं की ? (समीपक सम्बोधित कए श्रीकृष्णक प्रति उलहनगीत गबैत छथि ।)

६०- साश्वत् - क । ६१ - सो - क । ६२ - हम सुतल हु - क ।

सखि हे ! मन जनु करिअ मलाने ।
अपन करम फल हमे उपभोगब, तोहें किअ[६१] तेजह पराने ॥ध्रुवम्॥
पुरुब-पिरिति रिति हुनि जओ बिसरल,[६२]तथिहु न हुनकर दोसे ।
कतेक जतन धरि जओ परिपालिअ, साप न मानय पोसे ॥
कबहु नेह पुनु नहि पागासब, केवल फल अपमाने ।
बेरि सहस बस अमिअो[६३] भिजाबिअ, कोमल न होअ पखाने ॥
गुरु उमापति भन,[६४] पहु देब दरसन, मान हमुत समधाने[६५] ।
सकल-नृपतिपति हिन्दूपति जिउ, महारानि[६६] बिरमाने ॥

अल धाव जीविअ-दुब्बलाआसेण । [अल नावज्जीवित- दुर्बलाशा-सेन ।]

(सत्यभामा[६७] कृष्णमधिकृत्य पुनः समुखीं प्रति उपहासगीतं गायति ।)

(विभास-रागे गीतम्- १३)

[६८]सहस पूर्ण-शशि, रहओ गगन बसि देअओ[६९] दसओ दिस दन्दा ।
भरि बरिसओ बिस, बहओ दसओ दिश, मलय समीरन मन्दा ॥

कोलाब-राग मे गीत—१२

परिभव = अपमान । जलधर = मेघक । आतप = रौद । परिनामे = परिणाम (फल) । मलाने = म्लान (दुखी) । रिति = रीति । अमिअ = अमृत । पखाने = पाषाण (पाथर) । परसन = प्रसन्न । अवसान = समाप्त । हिन्दूपति जिउ = हिन्दूपतिजी । बिरमाने = विशेष अनुरक्त ।

प्राणक हेतु ई दुर्बल प्रयास व्यर्थ थिक ।

(सत्यभामा कृष्णक विषयमे समुखीक प्रति उपहासगीत गबैत छथि।)

विभास-राग मे गीत—१३

पूर्णशशि = पूर्णिमाक चन्द्रमा । गगन = आकाश । दन्दा = द्वन्द्व (लौंघा-मानी) । बिस = विष । मलयसमीरन = मलयपर्वतक बसात । हिन = हीन ।

---

६३ - भिज्ब का ग । ६४ - बिसरल सहओ न हुनकर का । ६५ - बेरि सहस बस अमिअ का ग । ६६ - गुरुउमापति हरि होएत परसन- का । ६७ - अपमाने- का । ६८ - माहेसरि देह क । ६९ - (कतिक अभाव)- का । ७० - सहस पुन्निमा शशि- क । ७१ - निसि-बासर देओ - क ।

साजनि ! आब जीवन कोन काजे ।
पहु मोहि हिन करु, अपयश जग भरु, सहब न पाबिअ लाजे ॥
॥ध्रुवम्॥
कोकिल अलिकुल, [७२]कलरबें आकुल, करओ दहओ दुहु काने ।
[७३]सिरिस-सुरभि जत, देह दहओ तत, हनओ मदन[७४] सतबाने ॥
[७५]कवि उमापति भन, हरि होएत परसन, मान होएत समधाने ।
सकल- नृपतिपति हिन्दूपति जिउ, पटमहिषी बिरमाने ॥

(इति मूर्च्छति ।)

श्रीकृष्ण— हा धिक् ॥ ईदृशी दशा ? सन्देहे[७६] पतिता मया । तदुपसर्पाम्येनाम् । (इत्युपसर्पति । सखीं संज्ञया निवार्य विज्ञापयित्वा चरणतलं परामृशति ।)

सत्यभामा— (ससंभ्रम) सहि सुमुहि ! अण्णारिसो ज्जेव अज्ज दे करप्परसो । [सखि सुमुखि ! अन्यादृश एव अद्य ते करस्पर्श ।] (नयने उन्मील्य श्रीकृष्णं दृष्ट्वा अवगुण्ठ्य उपविशति ।)

अलिकुल = भौंराक समूह । सतबाने = सैयो बाण । सिरिस-सुरभि = शिरीषक फूलक सुगन्धि । मदन = कामदेव । हनओ = मारओ ।

(ई कहि मूर्च्छित होइत छथि)।

श्रीकृष्ण—हाय ! एहन दशा मे प्रियाकें उपस्थित कए देल हम ! तखन हिनक समीप जाइत छी । (ई कहि लग जाइत छथि । सखी कें इशारा सं रोकि कें निवेदन कए पाएर जैतेत छथि ।)

सत्यभामा—(होश मे आबि)सखि सुमुखि ! आइ तोहर स्पर्श आने तरहक लगैत अछि। (आँखि खोलि श्रीकृष्णकें देखि घोंघ तानि बैसैत छथि) ।

---

७२ - करय बेआकुल - का ग । ७३ - सिसिर - क का ग । ७४ - सहओ - का । ७५ - सुकवि उमापति हरि - क का ग । ७६ - सन्देहे (अभाव) - का ।

श्रीकृष्णः — (बढाञ्जलिः) प्रिये ! प्रसीद मानिनि !

(मालव — रागे[७७]मानिनीगीतम् — १४)

ओ गे मानिनि ॥ध्रुवम्॥

अरुणपुरुब दिशा[७९], बहलि सर्वरि निशा[८०], गगन[८१]मगन भेल चन्दा ।
[८२]मुँदि गेलि कुमुदिनि, तहअओ तोहर धनि, मूँदल मुख अरविन्दा ॥१॥

(एतस्मिन् अर्थे श्लोकः)

शशि मलिनि कौमुदी, वासिनि कौमुदी हीयते
वदति कलमन्वतः शृणु समन्ततः कुक्कुटाः ।
पुरो विगतिरोहिता पदि तिरोहितास्तारकाः
कथं तव वरोरु ! हे ! मुखसरोरुहे मुद्रणम् ॥१४॥

ओ गे मानिनि !

कमल वदन, कुवलय दुहु लोचन, अधर मधुरि निरमाने ।
सगर सरीर कुसुम तुअ निरिजल, किए तुअ हृदय पषाने ॥२॥

श्रीकृष्ण—(कल जोरि) प्रिये ! प्रसन्न होअ मानिनि !

मालवराग मे गीत—१४

अरुण = सूर्य । बहलि = बहि गेल (बीतल) । सगरि निशि = सम्पूर्ण रात्रि । गगन = आकाश मे । कुमुदिनि = चन्द्रक अस्त भेलापर कुमुदिनी सङ्कुचैछ ओ सूर्यक उगला पर कमल फुलाइछ । अरविन्दा = कमल ॥१॥

(एहि पदक अर्थ मे श्लोक)—

कुमुदक (रात्रि मे फुलाइवला एक उज्जर फूलक) कान्ति क्षीण होइत अछि, चन्द्रमा मे प्रकाश कम भए रहल अछि, आसिर भजतरि मुर्गा बजैत अछि से सुनू, पूब दिस अत्यन्त लाल भए गेल, तारा सब लुप्त भेल, तथापि हे वरोरु (सुन्दर ओरबाली) अहाँक मुँहरूपी कमल मुनएले किएक अछि ?

---

७७ — मानिनी (अभाव) — क ग । ७८ — (अभाव) — क ख । ७९ — दिशि — ख ग । ८० — निशि — ख ग । ८१ — गगन मलिन — ख । ८२ — मुनि — ख ग ।

(एतस्मिन् अर्थे श्लोकः)

आस्यं ते सरसीरुहेण रचितं, नीलोत्पलाभ्यां दृशौ,
बन्धूकेन रदच्छदौ, तिलतरोः पुष्पेण नासापुटम् ।
इत्येवं विधिना विधाय कुसुमैः सर्वं वपुः कोमलं
क्रूरं मानसमश्मना पुनरिदं कस्मादकस्मात् कृतम् ॥१०॥

ओ गे मानिनि !

असकति कर कङ्कण नहि परिहसि हृदय हार भेल भारे ।
गिरिसम गरुअ मान नहि मुञ्चसि, अपरुब तुअ वेवहारे ॥३॥

(एतस्मिन् अर्थे श्लोकः)

कान्ते किं तव कङ्कणैक न कुचयो र्नो हस्तयोः कङ्कणं
दोर्वल्ली वलयावलीमपि न दौर्बल्येन विन्यस्यसे ।
हारं भारमिवापधारयसि चेदेवं गुरु मेरुवद्
मानं मानिनि ! किं न मुञ्चसि मनाक् ते भावमावेदम ॥११॥

ओ गे मानिनि !

अनुनय परिहरि हरषि हेरु धनि, मानक अवधि बिहाने ।
हिमगिरि कूमरि चरण हृदय धरि सुमति उमापति भाने ॥४॥

कमल वदन = कमल सं मुँहक निरमाने = निर्माण भेल अछि । कुवलय = कुमुदिनी सं । मधुरि = माधुरी फल सं । पषाने = पाषाण = पाथर ॥२॥

(एहि पदक अर्थ मे श्लोक)

अहाँक मुँह (आस्य) कमल सं बनल अछि, नील कमल सं दृग अछि, मधुरीक फल सं (बन्धूकेन) दुनू ठोर, तिलक फूल सं नाक बनल अछि— एहि तरहें फूलहि सं सम्पूर्ण देह कोमल बनाए दै निष्ठुर मन पाथर सं एकाएक कोना बनाओल गेल ? ॥१०॥

असकति = अशक्ति (आवश्य सं) । परिहसि = पहिरैत छी । गरुअ = भारी । मुञ्चसि = छोड़ैत छी । अपरुब = अपूर्व ॥३॥

(एहि पदक अर्थमे श्लोक) —

[८३]प्रिये ! क्षम्यतामयमेको ममापराधः । अथवा,

(केदार-रागे गीतम् १५)

मानिनि! मानह जओं मोर दोस[८४]मानि करह वरु न करह रोस[८५]॥
भौंह कमान विलोकन बान । वेधह विधुमुखि ! कय समधान ॥
पीन पयोधर गिरिवर साधि । ब हु कोस धनि ! धरु मोहि बाँधि ।
[८६]की परिनति भय परतनि होहि । भूषण चरण-कमल न देहे मोहि ॥
सुमति उमापतिभन परमान । जगमाता देइ हिन्दूपति जान[८७] ॥

(ततः[८८] सत्यभामा प्रणम्य उत्थाय श्रीकृष्णः तां प्रति विलास-गीत गायति ।)

हे सुन्दरि ! अहांक स्तन पर वस्त्र किएक नहि अछि, हाथ में कंगना ओ पांहिलपी लत्ती मे सोनाक चड़ीक (वलय) पाँति मेहो कमजोरीक कारणें नहि लजबीत छी, हार (मोतीमाला) कें भार जकां बुझैत छी, तें एहि तरहें सुमेरु पर्वत सनक भारी मान कें थाड़बो किएक नहि छोड़ैत छी ? हे मानिनि ! ताहि आशय कें प्रकाशित करू ॥१३॥

अवगुन = दोषकें । परिहरि = छोड़िकें । हेन = देख । मानक अवधि विहाने = मान करबाक समय भोरे तक रहैछ । हिमगिरि कुमरि = पार्वती॥८४

प्रिये ! हमर एकटा एहि अपराध कें क्षमा करू । अथवा-

केदार-राग मे गीत—१५

शालि = शासन । रोस = ताम्रस । पीन = पुष्ट । पयोधर-गिरिवर साधी = स्तनरूपी पहाड़ मे साधिकें । कोप-विरत = ताम्रस कें शान्त कए । परमान = प्रमाण । भूषण = गहनाक रूप मे अपन चरण-कमल दएह ।

(ततः सत्यभामा कें प्रणाम कए उठि कृष्ण हुनका प्रति विलासगीत गबैत छथि) ।

---

८३ - (प्रकाशं प्रणाम) - ख ग । ८४ - दोसे - ख । ८५ - ख - (सकल चरणक अन्त्य गुरु) शालि करिअ वरु न करिअ रोसे । ८६ - कोप प्रलय - ख । ८७ - माहेसरि देइ बस पुर अभिमाने - क । ८८ - सत्यभामा - (प्रणम्य उत्थाय) - (केदार रागे - गीतसं० - १७) - ख ग ।

(गीतम्—१६)

[८९]तोहें धनि राजकुमारी, कुसुमहुँ नह सुकुमारी वरनारी लो ॥
नयन देहे जल डारी, मोहि वरु हलह निहारी, करें मारी लो ॥
तोहें मोहि हिरमनिहारी, अमिआ-भरलि जनि झारी, भय मारी लो॥
उमानाथे रिति परचारी तुअ बस भेलहु विचारी, परचारी लो ।
हिन्दूपति जिउ जाने, महारानि विरमाने, विद्यमाने लो ॥

सत्यभामा (श्रीकृष्ण प्रति)

(केदार-रागे गीतम्—१७)

ताहि अवसर ताहिठाम । माधव! किए तोहे लेल मोर नाम ॥
आब कि करब परकार । माधव ! अपयश भरल संसार ॥
सबहु पाओल अवकास । माधव ! जग भरि भेल उपहास ॥
कोने परि सखिसभे साथ माधव ! उपर करब हम माथ ॥
जाहि देखि हसलिहुँ कान्हि । माधव ! से आबे[९०] करति करतालि।
[९१]परम करम मोर वाम । माधव!सकल[९२] तकर परिनाम ॥
सुमति उमापति भान । माधव ! सुपहु करब समधान ।
हिन्दूपति जिउ जान । माधव ! माहेसरि देइ विरमान ॥

(इति तूष्णीं ।)

गीत—१६

कुसुम-हुँनह = फूलहु सं अधिक । अमिआ = अमृत ।

सत्यभामा —(श्रीकृष्णक प्रति

केदार-राग मे गीत—१७

ताहि अवसर = गीतसं० १७क बाद । परकार = उपाय । अवकाश = अवसर (उपहास करबाक) । करतालि = थपड़ी(हँसी उड़ाबैत) । वाम = विपरीत

८९ - (अभाव) - ख ग । ९० - आबे देखि ख ।

९१ - करम - ख । ९२ - अकल तनिक - ख ।

श्रीकृष्णः—(उत्थाय) प्रिये ! समाश्वसिहि, समाश्वसिहि !

सत्यभामा (आश्वस्य) अज्जउत्त ! आसामो वि म[२६] लज्जाअरो । [आर्यपुत्र ! आश्वासोऽपि मे लज्जाकरः ।]

श्रीकृष्ण प्रिये ! प्रसीद । स्फुटमाज्ञापय । कथं ते मानः[२७] समाधातव्यः ?

सुतनु समये दयादृगन्तः
त्वयि, युक्तो मयि ते दयादृगन्तः ।
भवतीं न विना परास्तभावः
कुपितायां त्वयि मे परास्तभावः ॥१२

(श्री[२८]कृष्णः सत्यभामां प्रति गीतं गायति —)

(गीतम्—१८)

[२९]केसरि तिलक कमल निरमान । चांद कुमुद लय पूजल काम ॥
धने धने [१] तुअ अनुरूप सिनेह[२], सुन्दरि ॥ध्रुवम्॥

समधान = समाधान । हिन्द पतिजिउ = हिन्दूपतिजी। (गुच्छित होइत छथि।)

श्री कृष्ण—(उठि कें) प्रिये ! मोन धीर करू ।

सत्यभामा—(शान्त भए) आर्यपुत्र ! आश्वासो हमरा लेल लज्जाजनक थिक।

श्री कृष्ण—प्रिये ! प्रसन्न होउ । साफ साफ आज्ञा दिअ। कोना अहाँक मानक समाधान होएत ।

अहाँक रहला पर दयादृष्टिक हृदयवला हम संसार कें शान्त करैत छी, अतः हमरा प्रति अहाँक दयादृष्टिक छोड़ (कृपाकटाक्ष, उचित थिक । अहाँक बिना हम परास्त नहि भए सकैत छी (अर्थात् अहीं सन राँ परास्त होइत छी), किन्तु अहाँक तमसएला पर हमरा दोसराक (अन्य नायिकाक) विषय मे भाव अस्त भए जाइत ॥१२॥

(श्रीकृष्ण सत्यभामाक प्रति गीत गबैत छथि —)

गीत—१८

केसरि = केशर जकर रंग पिरोल होइछ। चांद = चन्द्रमाकें । धने = धन्य ! अलक = केश मे । नखतक = नक्षत्रक, ताराक । बेनी = जुट्टी । बिरचि

२६ मत्तरवाअरो ख। २७ मन. । २८ (पंक्तिक अभाव) ख । २९ (गीतक अभाव) ख २० तुअ रूप भल अनुरूप सुन्दरी क ।

झलक झलक मुकुतावलि कांति। जनि जलधर तर नखतक पांति ॥
बेनी बिरचि सीम फुल देल । जनि फणिपति सिर मणि उगि गेल।
बेसरि मोति झलक मुखइन्दु । उमगि अमिअ-रस गर जनि बिन्दु॥
[३०]पदक-हार कुच-भिर पड़ डारि । मखमलि हेरि भेल हिठि वारि॥
[३१]रसिक उमापति भान । लखिमा देइ पति हैं रस जान ॥

सत्यभामा—(मुमुर्षोमधिकृत्य[३२] कृष्ण प्रति) —

(मल्लार राग गीतम् १९)

माधव ! [१]अरह हमर समधाने । [२]हरि मोहि पारिजात तरु दाने ॥
[३]हरिचन [४]चन्दन परधाने[५] । नहि तओर हमर अवस अवसाने॥
[६]हरि पर हमर [७]पुन्य [८]अभिमाने । हमर[९] वह [१०]सरि नहि [११]आज अपमाने ॥
[१२]सुनहि उमापति भन परमाने । परमरिगी देइ हिन्दूपति जाने ॥

श्रीकृष्णः—(दौवारिक प्रति[१]) धर्मदास दौवारिक ! देवीगृहान्नारदमानय ।

(नेपथ्ये—यथाज्ञापयति राजन् ।)

= अनाद । परिचिति = पर्यराजक । केसरि = नाकक भूषण से मोती झलकैत [illegible] मुखरूपी चन्द्रमा अमृत उछाल कें अमृतक बिन्दु [illegible]

सत्यभामा -(मुमुर्षी कें कहैत कृष्णक प्रति) —

मल्लार राग गीत - १९

समधाने = समाधान । तोरल = तुरतपरधाने = प्रस्थान । अवस = अवश्य अवसान = अन्त (मृत्यु) । हम सह = हमरासँ वा हेतु सह = कर्क समान ।

श्रीकृष्ण - धर्मदास दौवारिक ! देवीक(रुक्मिणीक) घर सँ नारद कें एनए [illegible] ।

(नेपथ्य मे राजाक जे आज्ञा ।)

३० (पंक्तिक अभाव) ग । ३१ (पंक्तिक अभाव) ख ।
१ (पंक्तिक अभाव) ख । २ देह ख ग । ३ [illegible] ख ।
४ [illegible] ख । ५ [illegible] ख । ६ हमरा हमहि ख । ७ दौवारिकप्रति (अभाव) ख ।

नारदः (प्रविश्य) अनुजानीहि मां पुरन्दरपुरगमनाय ।

श्रीकृष्णः—एतं भवता मद्वचसा पुरन्दरो वाच्यः—

(श्लोकद्वयं * नारदहस्तेन श्रीकृष्ण पुरन्दरं प्रति सत्यवाक् प्रेषयति ।)

पुरन्दर ! प्रेषय पारिजातं पश्यन्तु वध्वस्तव साभिलाषाः ।

पुलोमकन्याकुचकुङ्कुमाक्तं[८] भिनत्तु माशार्ङ्गशरस्तवोरः ॥१३॥

(नारदं प्रति) क्षिप्रं प्रस्थीयताम्[९] ।

नारदः—तथा । (इति निष्क्रान्तः ।)

श्रीकृष्णः—धर्मदास ! प्रातर्गत्वा धनञ्जयं ब्रूहि, सज्जीभवतु भवानमरसिद्धिः समराय । अग्रेऽपि, सुभद्रा प्रियाश्वासनाय प्रेषणीया ।

(नेपथ्ये—यथा देवाज्ञा ।)

नारद - (प्रवेश कए) इन्द्रक नगर जएबाक हमरा आज्ञा देल जाए ।

श्रीकृष्ण - अपने हमर समस्त इन्द्रकें एहिरूपें कहबे करू-

(श्लोकद्वय अपन उक्ति नारदक हाथें इन्द्रक प्रति पठबैत छथि) -

हे इन्द्र ! पारिजात पठाउ । ताहि लेल उत्कण्ठित अहाँक भावहु लोकनि (श्रीकृष्णक स्त्रीगण) देखथ । पुलोमाक कन्या (शची = इन्द्रक पत्नी) क स्तनक कुंकुम सं लिप्त अहाँक छातीकें शार्ङ्गक (श्रीकृष्णक धनुषक) तीर जनु बेधए (अर्थात् जौ पारिजात नहि पठाएब तें छाती बेधल जाएत से जानथ)।१३।

(नारदक प्रति झट दए आएब ।

नारद—बेस । (बहार भए गेलाह) ।

श्रीकृष्ण—धर्मदास ! भोरे जाए कें अर्जुन कें कहिहनु अहाँ इन्द्र सं युद्धक हेतु तैयार होइ' । दोसरी बात, जे सुभद्रा कें प्रियाक(सत्यभामाक) आश्वासनक हेतु पठा दथि ।

(नेपथ्यमें—जे सरकारक आज्ञा ।)

---

८ (पंक्तिक अभाव) क । ९ माण्डित - क ख ग ।

९ (अभाव) क ।

(ततः प्रविशति सुभद्रा)

सुभद्रा[१०]—(सत्यभामां प्रति) सखि सत्यभामे ! समाअस्ससिहि, समाअस्ससिहि अवणइस्सदि दे मण्णु अज्जो । [सखि सत्यभामे ! समाश्वसिहि, समाश्वसिहि । अपनेष्यति ते मन्युम् आर्यः ।]

श्रीकृष्ण—कथं चिरायते नारदः ?

नारदः—(प्रविश्य कृष्णं प्रति)

यत्र मोहवशात् कृष्ण ! ब्रह्मा शम्भुश्च मुह्यतः[११] ।

लोकेशश्रीमदान्धस्य तत्र शक्रस्य का कथा ॥४॥

परमानुग्रहीतव्यः श्रीकृष्णेन[१२] सदापनोदेन ।

श्रीकृष्णः[१३]—नारद ! कथय, कथय ।

नारदः—(उपसृत्य) श्रीकृष्ण ! इदं प्रत्युत्तरितं पुरन्दरेण—

पारिजातदलं यावच्छूचिकाग्रेण विद्ध्यते[१४] ।

तावत् कृष्ण ! विना युद्धं मया तुभ्यं न दीयते ॥१५॥

(तखन सुभद्रा प्रवेश करैत छथि)

सुभद्रा - (सत्यभामाक प्रति) सखि सत्यभामा ! स्थिर रहू, अहाँक क्रोधकें आर्य दूर करताह ।

श्रीकृष्ण - नारद देरी किएक कए रहल छथि ?

नारद— (प्रवेश कए) जाहि श्रीकृष्णक लग ब्रह्मा ओ महादेव सेहो मोह सं अपकृतिमन्त भए जाइत छथि तनए तीन लोकक आधिपत्यक लक्ष्मीक मद सं अन्ध भेल इन्द्रक तँ कथे कोन ? ॥१४॥

मूदा मद हराए कें श्रीकृष्णक प्रति अनुग्रह करब उचित छलनिहि । (लए आए) श्रीकृष्ण ! इन्द्र ई उत्तर देलन्हि अछि-पारिजातक पातकें जतया सुइयाक नोक सं बेधि सकैत छी ततया हम हे कृष्ण ! बिनु युद्ध हम अहाँकें नहि दए सकैत छी ॥१५॥

---

१० (सुभद्राक उक्तिक अभाव) क ।११ मुह्यते - क ख ग ।

१२ श्रीकृष्णो क ।१३ (अभाव) क । १४ विद्धते क ।

श्रीकृष्ण — नहि असुभवतु फल नारद ! वैमुख्यस्य । अयमहमिदानीं भवता विहङ्गमराजम् ह्वयामि । दक्ष धनञ्जय ! पारिजाततरुं हरामि, इन्द्रमदं चापवारयामि । प्रिये ! अनुज्ञातोऽहं ।

सत्यभामा — [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ।]

श्रीकृष्ण — अयं नारदो नियोजयिष्यत्यावयोः कार्यसिद्धिम् ।

नारदः — उ[illegible] मे लोचने आतपुत्र-संग्रामदर्शनाय ।

(श्रीकृष्णो धनञ्जय-नारदाभ्यां सम पारिजाततरुहरणाय निष्क्रान्तः ।)

सत्यभामा — सहि सुहद्दे ! अवि णाम विदक्खो अज्जउत्तो भत्तिं पडिलिवहिस्सदि [illegible] ? [सखि सुभद्रे ! अपि नाम कृतकार्यं आर्यपुत्रो भक्तिं प्रतिलिप्स्यति ?]

सुभद्रा — अथ किम् ? [अथ किम् ?]

सत्यभामा — [मालव-राग में गीतम् [illegible]]

प्रथमहिं ओ रे,
कुसुम-रचित एक तलपहु, की अलपहु ।
[illegible] [illegible] पहु ॥

श्रीकृष्ण - सखा नारद ! विमुख होएबाक फल भागब । इयेह हम [illegible] पक्षिराज (गरुड़) के बजबैत छियन्हि । दक्ष (युद्ध मे पटु) अर्जुन ! पारिजातक गाछके हरण करैत छी, आ इन्द्रक मद के दूर करैत छी । प्रिये ! आज्ञा दिअ ।

सत्यभामा — कर्त्तव्य पूर्ण कए चुकु । अहाँ आनन्दमय समाचार देनिहार के पठाउ ।

श्रीकृष्ण — इयेह नारद आबि कें कार्यसिद्धिक समाचार सुनओताह ।

नारद — हमर आँख भाविजनोकनि युद्ध देखबा लए उत्कण्ठित अछि ।

(श्रीकृष्ण अर्जुन ओ नारदक संग पारिजात-हरणक हेतु प्रस्थान कएल)

सत्यभामा — सखि सुभद्रे ! की आर्यपुत्र कार्यसिद्धि कए लउटए चुकलाह ?

सुभद्रा — त आओर की ?

१५—पडिलिवहिस्सदि—क ख ।

तम्हि[१६] बिनु ओ रे,
नयन बरिस[१७] जलधर सन, की परसन ।
कतिखन देत विहि दरसन ॥
उपवन ओ रे,
पिक पञ्चम कर जनु सर, की अनुसर ।
मार मदन धरि[१८] धनु-सर ॥
सुनु धनि ओ रे,
सुमति उमापति भन मत, की धन मत ।
सुपहु मिलत रस जनमत ॥

सखि सुहद्दे ! वामं णअणं मे परिस्फुरदि । [सखि सुभद्रे ! वामं नयनं मे परिस्फुरति ।]

सुभद्रा — सहि ! पेक्ख, णारदो संपत्तो [सखि प्रेक्षस्व, नारदः संप्राप्तः ।]

नारद — (प्रविश्य) देवि ! दिष्ट्या वर्धसे, जित श्रीकृष्णेन, हृतश्च[१९] पश्चात् पारिजाततरुः ।

सत्यभामा — (मालव-राग में गीत) - २०

तलपहु = तल्प (ओछाओन) पर । अलपहु = अलपहु (थोड़बो) । पहु = प्रभु (पति) परसन = प्रसन्न । विहि = विधाता । पिक = कोइली । सर = स्वर । मार मदन = कामदेव मारैत छथि (मार' पद मे श्लेष अछि जकर (१) मारथ ओ (२) कामदेव अर्थ हुअ) मदन शब्दक संग प्रयुक्त भेला सँ पुनरुक्तवदाभास अलङ्कार भेल ॥

सखि सुभद्रे ! हमर बामा आँखि फड़कैत अछि । (ई शुभक लक्षण थिक) ।

सुभद्रा — सखि ! देखू, नारद आबि गेलाह ।

नारद — (प्रवेश कए) देवि ! भाग्यक जोड़सरि छी । श्रीकृष्ण जितलाह, पाछु पारिजातक गाछ हरण कए लेलन्हि ।

१६—तनि - क ख । १७—बरसि—क । १८—धनि - क ख ग । १९—हृतः - क ख ।

सत्यभामा— इदं दाव पारिजातस्स औत्साहिकं देहु (इति हारं ददाति ।)
भअवं ! निवेदेहि समासेण समर जअ वृत्तन्तो । [इदं तावत् पारिजातस्य औत्साहिकं गृहाण । भगवन् ! निवेदय समासेन समर-जयवृत्तान्तम् ।]

नारद—अहो ! निर्दयं प्रहारः परस्परं भ्रातृपुत्राणाम् ॥

(वसन्त-रागे गीतम्—२१)

आ रे२० ॥

ऐरावत असवार पुरन्दर, धन-भूषण धनु हाथे ।
सहस्र तुरग चढि चलल धनुर्धर, तनय जयन्तक साथे ॥
आ रे२१ ॥ध्रुवम्॥

भाइ-भाइ रण भेल भयङ्कर, गजवर गरुड़ दुरन्ता ।
अधरज देखय देवगण२२ आयल, गिरिश२३ गोरि परजन्ता ॥
सारंग-सर सुरपति उर बेधल, गाण्डिव-पाणि जयन्ता ।
ठामहि ठोर ठोकि विनतासुत भाँगल२४ दिग्गज दन्ता ॥
पारिजात तरु गरुड़ चढ़ाओल, हरि करकमल उपाड़ि ।
सबकाँ शिर पुनु कयल समञ्जस, आयल भूषित मुरारि ॥

सत्यभामा— पहिने ई पारिजातक (पारिजातक) इनाम लिअ । (हार देत छथिन्ह) । भगवन् ! संक्षेप मे विजयक वृत्तान्त कहू ।

नारद— ओह ! अपन भ्रातिज- लोकनिक निर्दय प्रहार केहन छल !!

वसन्त राग मे गीत— २१

पुरन्दर = इन्द्र । धन-भूषण = मेघक गहना । तुरग = घोड़ा । तनय जयन्तक = अपन पुत्र जयन्तक (इन्द्रक पुत्र जयन्त छलथिन्ह) । गजवर = ऐरावत हाथी आ गरुड़ जनिक दीरघाक अन्त नहि, ताहि दुनू मे रण भेल । गिरिस गोरि परजन्ता महादेव आ गौरी पर्यन्त । सारंगसर = श्रीकृष्ण ।

२०—(अभाव) = का ग । २१—(अभाव) = का ग । २२ = देवमुनि = क । २३—गिरि की गिरिस = का । २४—आगल—का ग ।

सकल-यवन-वन वर-दावानल, दमन देव अवतारा ।
सकल-नृपति-पति हिन्दूपति जिउ२५, सब रस जानलिहारा ॥

(तत प्रविशति सपारिजातो गरुडारूढः श्रीकृष्णः, अश्वारूढो धनञ्जयः ।)

श्रीकृष्णः— प्रिये ! गृहाणेमं पारिजाततरुः ।

धनञ्जयः— अलि सत्यभामे ! मन्यन्ते सर्वासां मानवतीनां मूर्द्धनि विराजसे ।
अतः—

अयं रोगशोकादिकं नाशयित्वाऽर्थिनां दर्शनात् सर्वमर्थं ददाति ।
स ते स्नेहतो माधवेनोपनीतो महापुण्यभूमिस्तरुः पारिजातः ॥१६॥

तदुगीयताम् ।

सत्यभामा—(प्रणम्योत्थाय)—

(राजविजय—रागे गीतम्—२२)

जय जय पारिजात तरुराज । पाओल पुरुब-पुने२६ दरसन आज ॥

सुरपति = इन्द्रक छाती बेधिदेल । गाण्डिव-पाणि = अर्जुन । जयन्तक छाती बेधल । विनतासुत = गरुड़ । गमञ्जन = खेल । सकल यवन = सम्पूर्ण यवन रूपी वनक हेतु जंगली आगि ॥

(तखन पारिजात सहित गरुड़ पर चढ़ल श्रीकृष्ण जी घोड़ा पर चढ़ल अर्जुन प्रवेश करैत छथि ।)

श्रीकृष्ण— सखि ! इयेह लिअ पारिजातक गाछ ।

धनञ्जय— सखि सत्यभामे ! आप तँ एखन अहाँ मानवती सभक ऊपर शोभित भए रहलि छी । किछुक तँ

ई पारिजात रोग-शोक इत्यादि कें नष्ट कए दर्शनमात्र सँ इच्छुक व्यक्ति कें सब वस्तु दैत अछि । से महापुण्यक आश्रम पारिजातक गाछ अहाँ कें स्नेहपूर्वक श्रीकृष्ण देलनि अछि ॥१६॥

तें गीत गाउ ।

सत्यभामा — (प्रणाम कए ऊठि)

राजविजय- राग मे गीत— २२

पुरब पुने = पूर्वक (पहिलुका) पुण्य सँ । सुरेश भूषण = स्वर्गक शोभा ।

२५ पति—का । २६ = पुन = का ग ।

सरगक भूषण गुणक निवास । सुरहुक[२७] तोहें परिपूरल आस ॥
सेवक सब तुअ दानव देवा । मानवे[२८] जानव की तुअ सेवा ॥
सुरपति निअ कर करथि किआरी । सची देथि सुरसरि-जल ढारी॥
सुमति उमापति भन परमाने । माहेसरि देइ हिन्दूपति जाने ॥

नारदः—सत्यभामे ! जनासि ? पारिजाततटे दत्तमक्षयं भवति । तदारोपयतामङ्गणे ।

श्रीकृष्णः—एवमस्तु ।

(इति सर्वे रोपयन्ति ।)

श्रीकृष्णः—धनञ्जय ! बहिरनुगम्य राजराज विसर्ज्यागच्छ ।

(ततस्तथा कृत्वा पदभ्यामेव प्रविशतः ।)

सत्यभामा - नारद किं दिज्जो ? [नारद ! किं देयम् ?]

नारदः - प्रियः पदार्थः ।

सत्यभामा - सो को उण अज्जउत्तादो अण्णो ? [स कः पुनरार्यपुत्रादन्यः ?]

श्रीकृष्णः - प्रिये ! प्रभवसि मयि, देहि मां ब्राह्मणाय ।

(सत्यभामा लज्जते ।)

दानव देवा = दैत्य ओ देवता सेवक अछि । निअ कर = अपना हाथ । सची = इन्द्रक पत्नी शची । सुरसरि = गङ्गाक ॥

नारद— सत्यभामे ! जनैत छी ? पारिजातक तर मे दान देल अक्षय होइत छैक । तेँ आङन मे रोपू ।

श्रीकृष्ण— एहने होअओ । (सब केओ रोपैत छथि ।)

श्रीकृष्ण— अर्जुन ! बाहर जाए अरिअ कि कुबेर केँ विदा कए आउ ।

(तखन तहिना कए पएरहि दुनू गोटा- अर्जुन ओ श्रीकृष्ण प्रवेश करैत छथि) ।

सत्यभामा—नारद ! की दिअ ?

नारद— प्रिय पदार्थ ।

सत्यभामा—ओ पदार्थ आर्यपुत्र सँ आन कोन भए सकैछ ?

२७ = सत्रहुक = क । २८—मानव = ख ।

नारदः - कथं लज्जसे ?

गौर्या मे गिरिशो दत्तः पौलोम्या च पुरन्दरः ।
तथा तटे तरोरस्य त्वया कृष्णः प्रदीयताम् ॥१७॥

सत्यभामा - (कुशादिकमादाय) अज्ज इत्थ दि अकुण्ठिअ-अज्जउत्त-चरणभजणकामा अज्जउत्तं णारदाय देमि । दक्खिणा च देमि । [अद्य त्वपि अकुण्ठितार्यपुत्रचरणभजनकामा आर्यपुत्रं नारदाय ददे । दक्षिणां च ददे ।]

नारदः - स्वस्ति । सुभद्रे ! त्वया किम् दीयते धनञ्जयः ?

धनञ्जयः - एवं भवतु । प्रभवति मयि श्रीकृष्णानुज्ञा ।

सुभद्रा - (सलज्जं सकल्पं ददाति ।)

नारदः - स्वस्ति । युवां मे दासी संवृत्तौ ।

उभौ - किमधिकं स्यादभीष्टम् ?

नारदः—(सगर्वम्) किङ्करौ ! किं कारयामि ?

श्रीकृष्ण - प्रिये ! हमरा पर अहाँ केँ अधिकार अछि । हमरा ब्राह्मणक लेल दान करू ।

सत्यभामा- (लजाइत छथि) ।

नारद— किएक लजाइत छी ? हमरा गौरी देलनि महादेव, शची देलनि इन्द्र । तहिना अहाँ एहि गाछक तर मे कृष्ण दिअ ।

सत्यभामा— (कुश आदि लए) अज्ज (आइ) इत्यादि अनवरत आर्यपुत्रक चरण-सेवाक कामना सँ आर्यपुत्र केँ नारदक हेतु दान करैत छी, दक्षिणा सेहो दैत छी ।

नारद— स्वस्ति । सुभद्रे ! अहाँ अर्जुन कियेक नहि दैत छी ?

धनञ्जय— एहिना हो । श्रीकृष्णक छोटि बहिन (सुभद्रा) केँ हमरा पर अधिकार छन्हि ।

सुभद्रा— (लजाइत संकल्प कएकेँ दैत छथिन्ह) ।

नारद— स्वस्ति । अहाँ दुनू (श्रीकृष्ण ओ अर्जुन) हमर दास भेलहुँ ।

दुनू— एहिसँ बेसी की नीक होएत ?

हल विभर्तु श्रीकृष्णः कुद्दालं च धनञ्जयः ।
द्वयो वर्ष स्कन्धमारुह्य भ्रमिष्यामि यथासुखम् ॥१८॥
चरणौ तावत् सपादुकम् ।

उभौ—अनुग्रहोऽयमावयोः ।

नारदः—(स्वगतम्) एवमेतत् । अहो ब्रह्मण्यता लीला वा परमेश्वरस्य !! (प्रकाशम्) केन वा विश्वम्भरस्य वृकोदर तुजस्य च तूर्णमुदरम्? भवतु विक्रेतव्यौ । (उच्चैः) कोऽपि दासकेता वर्तते ?

सुभद्रा—सखि सत्यभामे ! यावद् रुक्मिणी न क्रीणाति तावद् क्रीणीहि आर्यम् ।]

सत्यभामा—(सलज्जम्) एषा क्रीणामि । किं मूल्यं, सुवर्णभारसहस्रं, मणिरत्नराशी वा, नवनिधयो वा, त्रयो लोका वा ?]

नारद—(गर्व सँ) दुनू दास । केम्ह काज करबौ ?

श्रीकृष्ण हर धरबु औ अर्जुन कोदारि । जथवा दुनूक कान्ह पर चढ़ि कें बेना मन होएत घुमब ॥१८॥

तावत् दुनू पाटए पएर दबाउ ।

दुनू—ई तँ, हमरा दुनू पर कृपा भेल ।

नारद—(मनहि मन) ठीक । अहो परमेश्वर ब्राह्मणक प्रति स्नेह वा लीला!! (प्रकाश—सनाथ)अथवा के एहि विश्वम्भरक (संसारक पेट भरयनलाक) औ वृकोदरक (हजार सन पेटवलाक) छोट भाए अर्जुनक पेट भरए ? अच्छा, दुनू कें बेचि लौ । (जोरसँ) क्यो दास मोल लेब ?

सुभद्रा—सखि सत्यभामे ! यावत् रुक्मिणी नहि किनैत छथि तावत् आर्यके (श्रीकृष्ण कें) कीनि लिअ ।

सत्यभामा—(लजाइत) एहेन किनैत छी । की दाम अछि ? सोनाक हजार भार, मणि औ रत्नक ढेर, नवो निधिआ कि तीनू लोक ?

नारदः—(कर्णौ पिधाय) शान्तं पापम् !!

सत्यभामा—सच्चं भण, जेण पच्चओ होइ । [सत्यं भण, येन प्रत्ययो भवति ।]

नारदः—धेनुं देहि ।

सत्यभामा—देमि । सखि सुभद्रे ! इमपि धनञ्जयं क्रीणीहि, जाओ द्वौपदी न जानाति ।]

सुभद्रा—अहं पि धेणुं देमि । [अहमपि धेनुं ददे ।]

नारदः—सम्मुको सौ । सत्यभामे देवि ! सम्पूर्णस्ते बहुमानः ।

सत्यभामा—भवदो आसिसो पसादेण । [भवत आशिषां प्रसादेन ।]

नारदः—किमतः परमिच्छसि ?

(सर्वे नृत्यन्ति ।)

(ललित-रागे गीतम्—२३)

जलधर समय करथु जलदाने । भरलि रहथु धरणी धनधाने ॥
धरम प्रजा परिपालथु राजा । चारू[२९] वरन करथु निज[३०] काजा ॥

नारद—(दुनू कान मुनि पाछ शान्ति हो (नारायण नारायण !!)।

सत्यभामा—सत्ते कहू, जाहि सँ विश्वास होअए ।

नारद—गाए दिअ ।

सत्यभामा—देत छी । सखि सुभद्रे ! अहाँ अर्जुन कें कीनि लिअ, यावत् द्रौपदी नहि बुझथि ।

सुभद्रा—हमहूँ गाए देत छी ।

नारद—दुनू कें छोड़ि देलियनि । सत्यभामे देवि ! अहाँक बड़ पैघ मान पूरा भेल ।

सत्यभामा—अपनेक आशीर्वादिक प्रसाद सँ ।

नारद—एकर बाद आर की चाहैत छी ?

एकेओ गबैन छथि)

२९—चारि-वा । ३०—निज-वा ।

वाभन वेद खेद नहि आवे । साधुक सन्धि कुजन जनु पावे ॥
पिशुन पात्र जनु नृपतिक कानें । गुण बुझि भूप करथु सम्मानें ॥
चिरे जीवथु हिन्दूपति देओ । गुण कीरति गावथि[२१] सब केओ ॥
[२२]सुमति उमापति भन परमानें । माहेसरि देइ हिन्दूपति जानें ॥

[भरत-वाक्यम्]

उर्वी सस्येन पूर्णा विलसतु सुजिनः सन्तु सर्वे च लोकाः
क्षोणीपालाः समस्ताद् विदधतु बहुगुणं मन्त्रिवर्गा वसूनि ।
साधूनां सन्निवासः सह पिशुनजनैरेकलोकेऽपि मा भूद्
आशूद्रान्तं कवीनां भ्रमतु भगवती भारती भङ्गिभेदैः ॥१२॥

इति महामहोपाध्याय-कविपण्डितमुख्य-श्रीमदुमापति-विरचितं
पारिजातहरणाख्यं नाटकं समाप्तम् ॥

(सलिक राज मे- गीत- २३)

धरणी = पृथ्वी । धरमे = धर्म सं । चारु वरन = ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र । खेद = कष्ट । सन्धि = सम्पर्क । कुजन = दुर्जन पिशुन = चुगिला । नृपतिक = राजाक ॥

[नाट्य—निर्देशकक कल्याण कामना]

पृथ्वी धान्य सँ परिपूर्ण रहओ, सब लोक सुखी होअओ, राजा सबतरहेँ धनक परामर्श कएकेँ बहुत गुणवान् कें अवकाश (यथायोग्य मौका) देथु । साधुव्यक्तिक निवास दुर्जनक संग एकलोकहु मे नहि हो । कविलोकनिक भगवती वाणी भक्तिवैचित्र्य सँ शूद्र पर्यन्त भ्रमण करथ ॥१२॥

इति म०म० कविपण्डितमुख्य सुमति श्री उमापति उपाध्यायक
बनाओल पारिजातहरणनाटक सम्पूर्ण भेल ॥

२१—गावहि—क । २२—(पातीक अभाव)—क ख ।

परिशिष्ट – १

उमापतिक स्फुट-काव्य-संग्रह

एखन धरि उमापतिक काव्यकृति मे पारिजातहरण सँ अतिरिक्त किछु गीत ओ श्लोक विभिन्न स्रोत सँ उपलब्ध होइत अछि। एहि सबहिक एकत्र संकलन डॉ० रामदेव झा अपन १९५० ई० मे मैथिली अकादमी पटना सँ प्रकाशित 'उमापति' नामक पोथी मे कयने छथि । ताहि संग्रह मे गीत सं०—१० सँ उमापतिक नहि थिकनि, कारण ई गीत रमापतिक 'रुक्मिणी परिणय' नाटकक छठम अंक मे भेटैत अछि। स्मरणीय थिक जे रमापति अभिनव-सुमति छलाह। उक्त संग्रहक सकल गीत लय 'कतिपय गीतक भ्रष्ट पाठक' उद्धार कय प्रस्तुत संग्रह तैयार भेल अछि। एहि संग्रहक गीत सं० -२ एक प्राचीन पोथीसँ मिलाय संशोधित भेल अछि। दुहु संग्रहक गीत सं० विवरण—

'उमापति'	प्रस्तुत सं०
१	२
२	१
३	१४
४	३
५	७
६	४
७	३
८	६
९	८
१०	×
११	९
१२	१०
१३	११
१४	१२, १३

१

॥ तारारा गीत दरबारी कान्हरा ॥

शङ्करि ! शरण भएल हम तोर ।
कुकरम देखि अधिक यदि कोपित, की करताह यम मोर ॥ध्रु०॥
शिवनख सुरतरु [तर] शिव ऊपर, हास वास अतिघोर ।
सहस दिवस-मणि, चान कोटि जनि, तनु दुति करत इजोर ॥
सोहे खर्ग अति गर्वक पूरनि, लम्बोदरि जगदम्बे ।
मनुज नागवर सकल सुरासुर, सबकाँ तुहि अवलम्बे ॥
वाम हाथ माथ अति कोमल, दहिन खड्गकर काली ।
पाँच कपाल भाल अति राजित, श्रीइन्दीवर कांती ॥
शिव-शव-आसनि ! पास योगिनि-गण, परिहन बाघरि छाला ।
रक्त रक्त लहलह कर रसना, नव यौवन मुण्डमाला ॥
फणि नेउर-केउर, फणि कङ्कण, हृदय हार फणिराजे ।
सह रसना फणि युग, फणि केउर, फणी हार, फणि छाजे ॥
चौदिस फेरव, शव मुण्डावलि, चिता अग्नि सन गेहे ।
तीनि नयन मणिमय सब भूषण, नव जलधर सम देहे ॥
शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक, नर मुनि धरत ध्येआन ।
त्रिभुवन तारिणि, नरक निवारिणि, सुमति उमापति भान ॥

- मैथिलभक्तिप्रकाश- गीत सं०—३८, पृ०—१४
(मैथिली गीत रत्नावली पृ०—२६, ३०)

२

॥ छिन्नमस्ताक गीत—तोड़ी ॥

जय जय जय परचण्डि चण्डिके ! आदिशक्ति तुअ चण्डी ।
ब्रह्मा शिव हरि, सकल भुवन भरि, तुअ सिरिजल ब्रह्माण्डी ॥

अष्टदल कमल उपर रवि-मण्डल, ता पर त्रिगुण सुरेखी ।
ता पर रति-विपरित मनमथ कर, ता पर तुअ पद पेखी ॥
लहलह रसन दसन अतिचञ्चल, विकट वदन विकराला ।
पीन पयोधर ऊपर राजित, उरग-हार मुण्डमाला ॥
उत्तम-अङ्ग वह वाम-पाणि कए, दहिन कलप धरि काती ।
निज गल उछिल निधुर मधुरी मधु, पीबि जिबिअ भल भाँती ॥
योगिनि-युगल पास दुइ पोसल, अरुण तरुण घनश्यामा ।
तीनि नयन तुअ जोति जगत भरि, सहस्र-भानु-अभिरामा ॥
भाव-भक्ति वर दिअ परमेश्वरि ! भुक्ति मुक्ति वरदाने ।
हिमगिरि-कुमरि-चरण हृदय धरि, सुमति उमापति भाने ॥

---मैथिलभक्तिप्रकाश-गीत सं०—१६, पृ० १५ ।

१

भ्रमरान्योक्ति

कमलिनि सङ्गे रङ्गे दिवस गमाओल
कुमुदिनि निशि विसराम ।
भमर ! पुछिअ तोहि, सरुप कहहु मोहि
अधिक प्रीति कोन ठाम ॥
अशन कुसुम रज, भमर ! सुरभि भज
दुहु विरचए एक साति ।
एक, दिन बान्धि निरोधि धरति तोहि
दोसरि बान्धसि पुनु राति ॥
सौरभ लोभ मुगुध मधुकर मन
जाए न केतकि - पास ।
काँट बेधत अङ्ग, रस नहि परसङ्ग
पाओब परम उपहास ॥

रस बुझ तें बुल, रसिक सबहु फुल
अधिक प्रेम गुणवान ।
छत्रपति भूप रसिक रस-बिन्दक
सुमति उमापति भान ॥

—मैथिली गीतरत्नावली ।

४

कृष्ण-सौन्दर्य

बेरि बेरि विरचथि, विधि विधु मण्डल
हरिमुख सरि नहि होए ।
नयन निरखि निंदि, मलिन मलिन होअ
नलिनी बन बस गोए ।
हरि एक अनुपम मोर सएहु अना ॥ध्रु०॥
कनक किरिट पुर, केउर मेउर
कङ्कण किङ्किणि पाँती ।
इन्द्रनील मनि, दिनकरमे आनि
कसल कनक कत भाँती ॥
शङ्ख सदसंम मधा सरोरुह
कारङ्ग पीअर बासे ।
जनि शशि सूरज, मेघ अगल कुज
इन्द्रधनु सहित अकासे ॥
अलि झुकि चरण जुगुल मुकुतावलि
मिलित ललित बनमाला ।
जनि सागर सित सामर सरसिज
हंसक पाँति विशाला ॥
धन माधव धन मास किसन पख
धन आठमि तिथि आजे ।
धन मथुरा, धन देवकि वसुदेव
जाहि जनमल यदुराजे ॥

कोटिओ काम उपाम न पावए
की बरनए कवि जाने ।
सब परिहरि हरिचरण हृदय धरि
सुमति उमापति भाने ॥

५

शम्भु-नटा

जय शम्भु नटा, जय शम्भु नटा ।
हँसि हर हेरथि गौरि निकटा ॥ध्रु०॥
भृङ्गी मधुर मृदङ्ग बजावथि
नन्दी निपुण झालि झमटा ।
ताल नमोरा दए मुख गावथि
सङ्गहि नारद मुनि विपटा ॥
चाम-कला सँ चूइल अमिअ-रस
तेहि [मजो] जिउल अजिन-लपटा ।
गौरि सिह देखि दुरहि पड़ाइलि
लाज कओन सहजहि खटटा ॥
भमइत भानु जटा लय झाँपल
चमकि उठए जनि जलद-घटा ।
गङ्ग तरङ्ग भूमि भीजल अति
नयन चमक जनि बिजुरि छटा ॥
हँसथि सखी सम दए करताली
ताल धरथि जनि सहस्र घटा ।
सानँद भए घर विअओ दिगम्बर !
सुमति उमापति मिनति गोटा ॥

— (मैथिली पद संग्रह-प्रो० रमानाथ झा)

६

विरहिणी

सखि हे ! कि कहब निज अभेआने ।
सुपहु कहल जबे, रोष कएल तबे
कह सुनल कुह काने ॥ध्रु०॥

आएल गमन बेरि, नयन नीर भरि
मोहि किछु कहिओ न भेला ।
एहनि करम हिनि, हम सनि के धनि
करतीं परस-मनि गेला ॥
ई हम जनितहुँ, एहन निठुर पहु
कुच कञ्चन-गिरि साथि ।
कौशल कर धए, बाहु-लता लए
थिर कए रखितहुँ बाँधि ॥
शिव सुमरिअ जबे, किअ न मरिअ तबे
बुझि पड़ हृदय पयाने ।
हिमगिरि कुमरि, चरण हृदय धरि
सुमति उमापति भाने ॥

(...प्राचीन-गीत - प्रो० रमानाथझा)

७

उचिती

देखलहु हर बर आज रे । रति पति केँ होअ लाज रे ॥
पुरब पुण्य फल आज रे । शङ्कर हमर समाज रे ॥
करथि हमर घर वास रे । पुरथि सकल मोर आस रे ॥
ओ त्रिभुवन-पति राज रे । हम निरधन धन साज रे ॥
हमर बहुत अभिरोष रे । अगा करथि सब दोष रे ॥
सुमति उमापति भान रे । शिव अग के नहि जान रे ॥

(डॉ० रामदेव झा— 'उमापति' पृ०-५२)

८

प्रथम-मिलन

पहिलहि भेलि धनि प्रियतम पासे ।
हृदय अधिक होअ लाज तरासे ॥
भयेँ थिर रहु धनि आँगहु न बोल ।
हेम-मुरति सन मुखहु न बोल ॥

करेँ दुहु भए पहु पास बैसाए ।
तओँ पए रहु धनि बदन लजाए ॥
मुख हेरि ताकि भमर भाँपि लेल ।
अङ्कुम सरि कए कमलमुखि लेल ॥
सुमति उमापति दुहु मन अनुमति ।
अभिनव रस बुझ हिन्दुपति नरपति ॥

(डॉ० रामदेव झा— 'उमापति'- पृ०-५५)

९

सौन्दर्य

आजु देखलि हमे ओ गे रमनी ।
सारद ससिमुखि गति गजगमनी ॥
भउँह कमान नयन शर साधा ।
दुहु कर धनु लए मारलि कामा ॥
कुच जुग सिरिफल-भर नत देहा ।
कमल फुलल जनि बिजुरी रेहा ॥
सामल लोम-लता तनु देहा ।
कनक आहुति जनि [शोभ] मसि-रेहा ॥
बिहँसि बिहँसि मुख करए अनन्दा ।
वसुधा बरिस सुधारस चन्दा ॥
देखल-मदन उमापति[1] भाने ।
रतिपति—पति गिलु पुरुवक दाने ॥

(डॉ० रामदेव झा— 'उमापति'- पृ०-५६)

१— ई गीत विद्यापतिक मैथिली मे 'विद्यापति गीत संग्रह' हस्तलिखित ग्रन्थ संख्या- ६६०८ मिथिला संस्कृत शोध संस्थान दरभङ्गा मे ताडपत्र संख्या- ५ पर बहुत पाठान्तर एक मे अछि । ओहि मे एहि गीतक पाँती सं० ७, ८, ९, १९, १९ भिन्न अछि । भनिताक पद अछि—

भने विद्यापति सुनु देव जानु ।
गुनमति नागरि रस दय आनु ॥

१०

मनाओन

कहहु सरूप कलावति !, देवहु दिवस कत सेद ।
मन बुझि अबुध अकाँ छह, अवहु करह परिछेद ॥
बिनुख न कर मुख हिमकर, सपुख अबैतें हमे हेरि ।
नयना जनु बिछड़ावह, देह मोरि दिठिहुक मेरि ॥
कौशलें करह मतागल, पुनु पुनु मोरि समाज ।
उकुतिहि गुपुत बेकत होअ, आबे कत करह बेआज ॥
संशय कर जिव डमडम बिहुँसिहु देह बिसवास ।
गावथि सुमति उमापति, हिमगिरि कुमरि दास ॥

(कविशेखर पुष्पाञ्जलि—खण्ड १, पृ० १९२)

११

॥ प्रेम-विभोर ॥

(बंगली—राग)

तोहें हमे समुचित पेम ।
रतने जडित जनि हेम ॥
भाविनि ! ॥ध्रु० ॥
तोहें ससि ! जल, हमे मीन ।
एक जीवन, तन भीन ॥
हमे पाओस, तोहें नीप ।
हमे गृह, तोहें मणि-दीप ॥
हमे कैरव, तोहें चन्द ।
हमे हिअ, तोहहि अनन्द ॥
हमे अलि, तोहें अरविन्द ।
अधर मधुर मकरन्द ॥
सुमति उमापति भान ।
हिन्दूपति रस जान ॥

(कविशेखर पुष्पाञ्जलि—खण्ड १, पृ० १९२)

१२

॥ चीरहरण ॥

दस पाँच सखि ब्रजनारी । जत छलि गेकुल बारी ॥
सबहु कएल एक संगे । करइत कत बिधि रंगे ॥
बजइत मधु-रस बानी । चललि जमुन दह पानी ॥

छन्द :—घए उतारिअ चीर अभरन, धसलि जमुना धाए ओ ।
कदम डारि मुरारि बैसल, लेल चीर चोराए ओ ॥
जमुना-जल भेल केली । सखि सब बाहरि भेली ॥
परिहन अपन न पाओल । तखना कान्ह बुझाओल ॥

छन्द:—कहहि सखि सभों कान्ह कपटी, चीर कँह केओ पाय ओ ।
चीर तोहर अहीर लूटल, छए दहोदिस धाय ओ ॥
रोसें कहलि सब गोरी । 'साखि करत भूप तोरी' ॥
'सुनह सुनह तोहें गोरी । कि करत भूपति मोरी" ॥

छन्द:—हारि सब ब्रजनारि देखल, अब न आन उपाय ओ ।
लाजें आकुल कएल बिनती, अवरा हाथ उठाए ओ ॥
'माधव होथु सहाए । चिर मोरा देथु छोड़ाए' ॥
उमानाथ कवि गावए । कृष्णकथा परचाएए ॥

(डॉ० रामदेव झा—'उमापति' पृ० ५९)

१३

बाल-चरित्र

दस पाँच सखि ब्रजनारी । दहि-दुध बेचनिहारी ॥
बालचरित्र कृष्ण केली । गवँस जमुन तिर गेली ॥

छन्द:— जाए जमुना-तीर सब सखि, ठाढ़ि भेलि ब्रजनागरी ।
नील पट तन, साजि भूषन, रूप जौबन आगरी ॥
घाट बैसल नन्द दानी । सुन्दर सारङ्गपानी ॥
बचन बोलथि हँसी हँसी । मधुर बजाबथि बाँसी ॥

छन्दः— स्याम सओं हँसि पुछ गोआरिन, 'घाट तोहें घटवार ओ।
जाएब मधुपुर गोरस बेचए, करह जमुना पार ओ'॥
सेह सुनि कहु स्यामसुन्दर, धए लटुरि भेल ठाढ़ ओ।
रोकि राख गोआरनी सब, दान माङए गाढ़ ओ॥
हाक देए हलु कान्हे। 'होअह पार कए दाने॥
'दहि-दुध किछु बरु लेहे। तोरित पार कए देहे'॥
छन्दः— "नीत मधुपुर गोरस बेचिअ, कबहु लाग न दान ओ।
कोन नगर तोहें बसह दानी, कहह के तुअ जान ओ"॥
'दान दए दए जाह नित दिन, भल न तोहर गेआन ओ'॥
"सुनह निठुर गोपाल मन दए, भल न तोहर टेब ओ।
एहि जग बसि के न जानए पार गेले सेब ओ"॥
"भए गेल दुपहरि बेरी। कसम जाएब गृह फेरी॥
गरुअ पड़ल किअ आजे। कहिनि कहेतें होअ लाजे"॥
छन्दः— "आज सब कुल-लाज परिहरि, जाह मथुरा बाट ओ।
नन्दसुत हमे प्रबल दानी, रहिअ जमुना घाट ओ॥
सुनह नारि गोआरि! मन दए, कहह सत्य सरूप ओ।
गर्व कए नहि दान दाखिअ, देखि बालक रूप ओ॥
कंसक करब विघसे। उधरब जत जदुबंसे॥
करब भक्त निज काजे। उग्रसेन देब राजे॥
छन्दः— बधल पुतना अओ उधारल जमल-अर्जुन बास ओ।
हनि अघे, बक मारि घालल, करब कंस-विनास ओ॥
धुरब निज जन अबल कएकहु, देल निश्चल राज ओ।
एहि महीतल जत भगत-जन, करब सब सिधि काज ओ॥
सकुचित भेलि सबे नारी। देखि चरित वनमाली॥
'लेह आलिङ्गन दाने। अओर अधर मधुपाने॥
छन्दः— राधिका सओं प्रीति बाढ़ल, कान्ह धरु करहार ओ।
चललि हरषित नारि मधुपुर, कए जमुना पार ओ॥

ननुआ से नन्दकुमारे। जसोमति प्रान अधारे॥
उमानाथ कवि गावए। कृष्णकथा परधावए॥
— (डॉ० रामदेव झा— 'उमापति' पृ०० ५९ से ६१)।

१४

नटेश्वरी

आएल नटनेसरि लेल परवेस।
अभरन तेजि भए जोगिन भेस॥
बघछाल कछिनि गोंथल प्रिमहार।
कछनी पहिरि माता भाउरि लेल।
नेपुर सबद मेदिनि उड़ि गेल॥
सती भवानी गुन अनुमान।
सुमति उमापति होउ समधान॥
— 'उमापति' पृ०० ५१

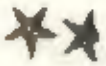

श्लोक[1]

(१) यत्र ब्रह्मसमुद्भवः, कमलया यस्मिन् निवासः कृतः,
पाणौ यत् परमेश्वरेण परम-प्रेम्णा समारोपितम् ।
भो भोः ! कुन्द-कदम्ब-केतकि-जपापुष्पाणि ! वः प्रार्थये
तत् पद्मं कुसुमं, वयञ्च कुसुमान्येवं न कार्यं मनः ॥

— उमानाथ—पण्डितस्य ।

(विद्याकरसहस्रकम्-श्लोकसं० ९४) ।

अर्थ— हे हे कुन्द कदम्ब केतकी ओ जोड़ा फूल सभ ! तोहरा सभ सँ प्रार्थना करैत छियहु जे जतय ब्रह्माक उत्पत्ति भेल, जाहि पर लक्ष्मी निवास कयलनि, जकरा परमेश्वर विष्णु अत्यन्त प्रेम सँ हाथ मे धारण कयलनि— से कमलो फूले छिक मा हमरो लोकनि फूले छिकहुँ— एहन मन नहि करह ॥

(२) अज्ञास्तरन्ति पारं, विज्ञा विज्ञाय द्राङ् निमज्जन्ति ।
कथय कलावति ! केयं, तव नयन-तरङ्गिणी-रीतिः ॥

— उमानाथ-पण्डितस्य ।

(विद्याकरसहस्रकम् श्लोकसं० ४०२) ।

अर्थ— हे कलावती ! तोहर आँखिरूपी नदीक ई कोन तरहक स्वभाव छह जे बिनु बुझनिहार लोक तँ पार भए जाइत छथि, मुदा, बुझनिहार सँ बुझितहि झट बय डूबिए जाइत छथि ?— से कहह ॥

१— उमापतिक एक श्लोक "पदरचना" पृ० ४४ पर अछि ।